मूल्य : दो रुपया पचीस नया पैसा

प्रथम संस्करण, संवत् २०१४

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस)

मुद्रक—ओमप्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ५१८६–१६

भूमिका

पालि भाषा भगवान् बुद्ध के कुछ समय पूर्व से लेकर अशोक-काल के कुछ समय पीछे तक, पूरे उत्तर भारत की राष्ट्रभाषा थी। इसका साहित्य बड़ा विशाल है। कालचक्रवश एक दीर्घकाल तक हम भारतीय पालि भाषा से अनभिज्ञ-से हो गये थे, किन्तु पडोसी बौद्धदेश लंका, बर्मा, श्याम आदि इसे धार्मिक भाषाके रूप में सुरक्षित रखे रहे। सम्प्रति उन देशों में इसका बहुत प्रचार है।

इस समय भारतवर्ष में भी पालि-शिक्षा की व्यवस्था की ओर हमारा ध्यान गया है। हिन्दू विश्वविद्यालय और राजकीय संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी, बिहार विश्वविद्यालय, पालि-प्रतिष्ठान नालन्दा और कलकत्ता, बम्बई आदि विश्वविद्यालयों तथा संस्कृत समिति बिहार (पटना) द्वारा इसके शिक्षण और परीक्षण की व्यवस्था है। आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद, सागर आदि विश्वविद्यालयों द्वारा भी डिग्री-कोर्सों में इसे स्थान प्राप्त है। उत्तर प्रदेश और बिहार के हाईस्कूल तथा इण्टर मीडियेट कोर्स में भी पालि रखी गई है और इन दोनों राज्यों में अब एक बड़ी संख्या में छात्र पालि पढ़ने लगे हैं। केन्द्रीय सरकार द्वारा पालि त्रिपिटक को भी देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया जा रहा है। यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है।

किन्तु, अभी पाठ्य-पुस्तकों तथा व्याकरण ग्रन्थों के अभाव से छात्रों को बड़ी असुविधा होती है। हिन्दीमें अब तक पालि के तीन व्याकरण-ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें पूज्य भदन्त जगदीश काश्यप द्वारा लिखित 'पालि महाव्याकरण' सर्वांग परिपूर्ण है, तथापि वह विशाल-काय ग्रन्थ छात्रों के लिए सुविधाजनक तथा सरल नहीं है। वह विशेष रूप से विद्वानों के योग्य है।

यह ग्रन्थ इस दृष्टि से लिखा गया है कि हाईस्कूल से लेकर एम. ए., आचार्य तक के छात्र इससे लाभ उठा सकें और उन्हें पालि व्याकरण का पूर्ण ज्ञान हो जाय। इसे 'मोग्गल्लान व्याकरण' तथा उसके परिवार-ग्रन्थ 'पदसाधन' के आधार पर तैयार किया गया है। हिन्दी में लिखे अन्य ग्रन्थों से भी सहायता ली गई है। हम इन सभी लेखकों के आभारी हैं।

इसे लिखने के लिए पालि-प्रतिष्ठान नालन्दा के रजिस्ट्रार श्री चन्द्रिका सिंह उपासक एम० ए० तथा राजकीय संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी के प्राध्यापक श्री जगन्नाथ उपाध्याय ने विशेष आग्रह किया था। हम इन दोनों कल्याणमित्रों के कृतज्ञ हैं।

ज्ञानमण्डल लिमिटेड के प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष ज्ञानवृद्ध सुहृद्वर श्री देवनारायण द्विवेदी जी की प्रकाशन-व्यवस्था के कारण इस ग्रन्थ को हमने उत्साहपूर्वक शीघ्र तैयार किया है। अपने प्रति उनके स्नेह को हम किन शब्दों में व्यक्त करें?

—भिक्षु धर्मरक्षित

विषय-सूची

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पालि व्याकरण

पहला पाठ

वर्ण-परिचय

पालि-भाषा में ४३ वर्ण होते हैं,[1] किन्तु कच्चायन-व्याकरण के लेखक ने ४१ वर्ण ही माना है। उन्होंने ऍ और ओँ को वर्ण नहीं माना है। मोग्गल्लान-व्याकरण के लेखक तथा पीछे के आचार्यों ने इन्हें भी वर्ण माना है, क्योंकि संयुक्ताक्षर के पूर्व आनेवाले ए और ओ ह्रस्व होते हैं।[2] इन वर्णों में १० स्वर[3] और ३३ व्यञ्जन[4] हैं।

स्वर

अ आ, इ ई, उ ऊ, ऍ ए, ओँ ओ।

इनमें दो-दो स्वर सवर्ण कहे जाते हैं।[5] जैसे—अ, आ—एक सवर्ण है। इ, ई—एक सवर्ण है। उ, ऊ—एक सवर्ण है। ऍ, ए—एक

१. अआदयो तितालीसवण्णा १,१।

२. इन्हें एत्थ, सेय्यो, ओट्ठो, सोत्थि आदि शब्दों से जाना जा सकता है।

३. दसादो सरा १,२ (आदि के १० स्वर हैं)।

४. कादयो व्यञ्जना १,६ (क आदि ३३ वर्ण व्यञ्जन हैं)।

५. द्वे द्वे सवण्णा १,३।

सवर्ण है। ओॅ, ओ—एक सवर्ण है। सवर्णों मे पूर्व वर्ण ह्रस्व हे।[१] जैसे—अ, इ, उ, एॅ, ओॅ। उनके दूसरे वर्ण दीर्घ हे।[२] जैसे—आ, ई, ऊ, ए, ओ।

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
स	ह	ळ	अं	

पॉच पॉच वर्णों के पॉच वर्ग है।[३] जैसे—**कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग।**

'अं' को निग्गहीत कहते है।[४] निग्गहीत का तात्पर्य है अनुस्वार।

विशेष

वैदिक भाषा मे ६४ अक्षर होते है और संस्कृत में ५०। पालि मे ऋ नहीं होता, उसके स्थान में कहीं अ, इ या उ हो जाते है। जैसे—गृह = गह, नृत्य = नच्च (यहाँ 'अ' हो गया है)। ऋणम् = इण, ऋषि = इसि (यहाँ 'इ' हो गया है)। ऋतु = उतु, ऋषभ = उसभ (यहाँ 'उ' हो गया है)।

---

१ पुब्बो रस्सो १,४।

२ परो दीघो १,५।

३ पञ्च पञ्चका वग्गा १,७।

४ बिन्दु निग्गहीतं १,८।

ऌ, ऐ, औ पालि में नहीं होते।

ऐ के स्थान में ए हो जाता है। जैसे—ऐरावण = एरावण, वैमानिक = वेमानिक, वैयाकरण = वेय्याकरण। कहीं-कहीं ऐ का इ तथा ई भी हो जाते हैं। जैसे—ग्रैवेय = गीवेय्य, सैन्धव = सिन्धव।

औ के स्थान में ओ हो जाता है। जैसे—औदरिक = ओदरिक, दौवारिक = दोवारिक। कहीं-कहीं उ भी हो जाता है। जैसे—मौक्तिक = मुत्तिक, औद्धत्य = उद्धच्च।

पालि-भाषा में 'श' और 'ष' नहीं होते, केवल 'स' ही होता है। सम्प्रति 'ळ' हिन्दी तथा संस्कृत में व्यवहृत नहीं है, किन्तु मराठी में इसका अब भी प्रचलन है।

पालि में व्यञ्जन हलन्त नहीं होते और न तो पद के अन्त में स्थित निग्गहीत म् होता है। पालि मे विसर्ग और रेफ भी नहीं होते। रेफ का कहीं-कहीं लोप हो जाता है और कहीं-कहीं वह 'र' हो जाता है। जैसे— कर्म = कम्म, सर्व = सब्ब, तर्हि = तरहि, महार्ह = महारहो, आर्य = अरिय, सूर्य = सुरिय, क्रीत=कीत, भार्या = भरिया, पर्यादान = परियादान, प्रेत = पेत, समग्र = समग्ग, इन्द्र=इन्दो।

दूसरा पाठ

शब्द-परिचय

विभत्ति

हिन्दी भाषा मे आठ कारक होते है, किन्तु पालि मे कारक सात ही माने जाते हैं। कारकों को ही पालि मे **'विभत्ति'** (= विभक्ति) कहते है। सम्बोधन कारक को कारक न कहकर उसे आलपन कहते है। कारकों को विभत्ति के क्रम से इस प्रकार जानना चाहिए —

	कारक	विभत्ति
१	**कत्तो**	**पठमा**
२	**कर्म**	**दुतिया**
३	**करण**	**ततिया**
४	**सम्प्रदान**	**चतुत्थी**
५	**अपादान**	**पञ्चमी**
६	**सम्बन्ध**	**छट्ठी**
७	**अधिकरण**	**सत्तमी**
८	**सम्बोधन**	**आलपन**

जिस प्रकार हिन्दी मे कारकों के चिह्न होते है, उसी प्रकार पालि म भी विभत्तियो के चिह्न होते ह, जो सदा शब्दो के साथ लगे रहते है।

लिङ्ग

हिन्दी म केवल दो ही लिङ्ग होते है—**पुल्लिङ्ग** और **स्त्रीलिङ्ग**, किन्तु पालि मे तीन लिङ्ग होते है —

(१) **पुल्लिङ्ग**
(२) **स्त्रीलिङ्ग**
(३) **नपुंसकलिङ्ग**

पुरुषवाची शब्दों को पुल्लिङ्ग कहते हैं और स्त्रीवाची शब्दों को स्त्रीलिङ्ग, किन्तु जो शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों नहीं होते हैं, वे **नपुंसकलिङ्ग** माने जाते हैं। जैसे—कुल, गेह, चित्त, मन, धन आदि। पालि भाषा पढने पर इनका ज्ञान स्वतः धीरे-धीरे हो जाता है।

वचन

पालि में भी हिन्दी की भाँति दो ही वचन होते हैं—**एकवचन**, **बहुवचन**। संस्कृत में 'द्विवचन' भी होता है, किन्तु पालि में द्विवचन नहीं होता।

शब्द

हिन्दी की भाँति पालि में भी सार्थक शब्द के पाँच भेद होते हैं—**संज्ञा**, **सर्वनाम**, **क्रिया**, **विशेषण**, **अव्यय**। सज्ञा को पालि में **'नाम'** कहते हैं।

रूप

विभक्तियों के लगने से शब्दों के जो रूप बनते है, उन्हीं का प्रयोग सर्वत्र होता है। यहाँ **अकारान्त, पुल्लिङ्ग, संज्ञा शब्द 'बुद्ध'** का रूप दिया जा रहा है :—

संज्ञा

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

बुद्ध

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	बुद्धो[1]	बुद्धा

१ कहीं-कहीं 'ओ' का 'ए' भी हो जाता है। जैसे—'वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे'। अत 'बुद्धो' का 'बुद्धे' भी रूप हो सकता है, किन्तु इसका प्रयोग कम देखा जाता है।

दुतिया	बुद्धं	बुद्धे
ततिया	बुद्धेन	बुद्धेहि, बुद्धेभि
चतुत्थी	बुद्धाय, बुद्धस्स	बुद्धानं
पञ्चमी	बुद्धा, बुद्धम्हा, बुद्धस्मा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
छट्ठी	बुद्धस्स	बुद्धान
सत्तमी	बुद्धे, बुद्धम्हि, बुद्धस्मि	बुद्धेसु
आलपन	बुद्ध, बुद्धा	बुद्धा

इन पदो का अर्थ हिन्दी मे इस प्रकार होगा —

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	बुद्ध ने	बुद्धो ने
दुतिया	बुद्ध को	बुद्धो को
ततिया	बुद्ध से	बुद्धो से
चतुत्थी	बुद्ध के लिए	बुद्धों के लिए
पञ्चमी	बुद्ध से	बुद्धो से
छट्ठी	बुद्ध का, की, के	बुद्धो का, की, के
सत्तमी	बुद्ध पर, मे	बुद्धों पर, मे
आलपन	हे बुद्ध !	हे बुद्धो !!

इन अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दो के रूप भी 'बुद्ध' शब्द के समान ही होगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
नर	मनुष्य	उरग	साँप
मनुस्स	,,	यक्ख	यक्ष
पुरिस	,,	देव	देवता
मनुज	,,	सीह	सिंह
सुर	देवता	गन्धब्ब	गन्धर्व
नाग	साँप	सोण	कुत्ता

सुनख	कुत्ता	लोक	ससार
आलोक	प्रकाश	संसार	,,
संघ	सघ	गाम	गॉव
ओघ	वाढ	धम्म	धर्म
पुत्त	पुत्र	पमाद	देर
याचक	भिखारी	रुक्ख	वृक्ष
दारक	लडका	दास	दास
वाणिज	वनिया	भूपाल	राजा
कुमार	कुमार	नरपति	,,
सुरिय	सूरज	अच्छ	भालू

इनके अतिरिक्त जितने भी अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द होंगे, सबके रूप 'बुद्ध' शब्द के समान ही होंगे।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

१. बुद्धस्स गामो। २. बुद्धान पुत्ता। ३. बुद्धेसु आलोको। ४ बुद्धम्हा लोको। ५. बुद्धेहि याचको। ६. सुनखस्स धम्मो। ७. मनुस्सान दारका। ८. भूपालस्स मनुजा। ९. सघस्स पुरिसा। १०. सुरेहि असुरा।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. बुद्ध के लिए। २ बुद्ध का पुत्र। ३. बुद्ध का धर्म। ४. बुद्ध से असुर। ५ बुद्ध में देवता। ६ भिखारियों का राजा। ७. कुमारों मे लडका। ८. सूरज का आलोक। ९. वनियोंके लडके। १०. गाँव में बाढ।

तीसरा पाठ

क्रिया

क्रिया के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को **धातु** कहते हैं। जैसे—भू, पठ, गम, चज इत्यादि।

रूप बनाने की सुविधा के लिए सभी धातुएँ ९ भागों में विभक्त हैं। प्रत्येक भाग को **गण** कहते हैं।

काल

पालि में भी तीन काल होते हैं—**वत्तमान काल, अनागत काल, अतीत काल।** वत्तमान (= वर्तमान) को 'पच्चुपन्न' भी कहते हैं और अतीत (= भूत) को अज्जतनी।

पुरुष

पालि में पुरुष भी तीन ही होते हैं, किन्तु उनका नाम इस प्रकार होता है —

१	अन्य पुरुष	=	**पठम पुरिस**
२	मध्यम पुरुष	=	**मज्झिम पुरिस**
३	उत्तम पुरुष	=	**उत्तम पुरिस**

तीनों पुरुषों के सर्वनाम

सो	=	वह	**तुम्हे**	=	तुम लोग
ते	=	वे	**अहं**	=	मैं
त्वं	=	तू	**मयं**	=	हम लोग

सभी काल में धातु के रूप **परस्सपद** और **अत्तनोपद** दो प्रकार के होते हैं, किन्तु व्यवहार में अत्तनोपद के रूप बहुत कम देखे जाते हैं। परस्सपद का ही प्रयोग बहुधा होता है।

वत्तमान काल

'पठ' धातु

परस्सपद

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	**पठति**	**पठन्ति**
मज्झिम पुरिस	**पठसि**	**पठथ**
उत्तम पुरिस	**पठामि**	**पठाम**

अर्थ

पठति	=	पढता है।	पठन्ति	=	पढते है।
पठसि	=	पढते हो।	पठथ	=	पढते हो।
पठामि	=	पढता हूँ।	पठाम	=	पढते हैं।

नीचे दिए हुए धातुओं के रूप भी 'पठ' धातु के समान ही होंगे। ये धातुएँ **भ्वादि गण** के हैं :—

धातु	**अर्थ**	**पठम पुरिस में प्रयोग**
भू	होना	भवति, भवन्ति
हस	हँसना	हसति, हसन्ति
रक्ख	रक्षा करना	रक्खति, रक्खन्ति
वद	बोलना	वदति, वदन्ति
पच	पकाना	पचति, पचन्ति
नम	नमस्कार करना	नमति, नमन्ति
गम	जाना	गच्छति, गच्छन्ति

दिस	देखना	पस्सति, पस्सन्ति
दिस	,,	दिस्सति, दिस्सन्ति
ठा	खड़ा होना	तिट्ठति, तिट्ठन्ति
सर	स्मरण करना	सरति, सरन्ति
याच	माँगना	याचति, याचन्ति
कन्द	रोना	कन्दति, कन्दन्ति
कम्प	काँपना	कम्पति, कम्पन्ति
चज	त्यागना	चजति, चजन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१ सो पठति। २ ते पठन्ति। ३ अहं पठामि। ४ मयं पठाम। ५ त्वं पठसि। ६ तुम्हे पठथ। ७ बुद्धो हसति। ८ दारका पचन्ति। ९ अहं पस्सामि। १० सो गच्छति। ११ मयं गच्छाम। १२ याचको वन्दति। १३ वाणिजा पस्सन्ति। १४ रुक्खो भवति।

(ख)

१ नरो धम्मं पठति। २ मनुस्सो भूपालो भवति। ३ पुरिसा गामं गच्छन्ति। ४ मनुजो बुद्धं नमति। ५ सुरा गामे दिस्सन्ति। ६ नागो देवं नमति। ७ उरगा गामम्हा गच्छन्ति। ८ यक्खो रुक्खे तिट्ठति। ९ देवा धम्मं पस्सन्ति। १० सीहो सत्र सरति। ११ गन्धब्बो दारकं याचति। १२ सोणा लोकं चजन्ति। १३ सुनखो ओवे कम्पति। १४ आलोके नपालो तिट्ठति। १५ सघो बुद्धं सरति।

(ग)

१ अहं गामं गच्छामि। २ सो गामे धम्मं पस्सति। ३ ते रुक्खेसु आलोकं पस्सन्ति। ४ भूपालो ससारे मनुस्से पस्सति। ५ दारकेसु वाणिजो धम्मं वदति। ६ याचको ओवे सुरियं पस्सति। ७ त्वं गामे वाणिजं

रक्खसि । ८. मय देवेसु याचका भवाम । ९. तुम्हे पुत्तान पमाद पस्सथ । १०. सुरियो आलोक नरान चजति । ११. बुद्धा मनुजान धम्म वदन्ति । १२. भूपाला वाणिजान गाम रक्खन्ति । १३ दासो मग्गे याचके पस्सति । १४. कुमारा लोके भूपाला भवन्ति ।

(घ)

१ अह भूपालस्स पुत्तो गामे भवामि । २. त्व याचकेसु दासो धम्म रक्खसि । ३. मय नरान धम्मे गामेसु पस्साम । ४. सो नरो आलोके बुद्ध पस्सति । ५ मय ओघे रुक्खेसु सुरिय पस्साम । ६. सो मनुस्सो गामम्हा गाम गच्छति । ७. सो याचको बुद्धस्स धम्म सरति । ८. अह गामे वाणिजस्स पुत्त पस्सामि । ९. सो भूपालान सघ आलोके सरति । १०. सुरियो लोके नरान आलोक चजति । ११. सो रुक्खो गामे ओघेन कम्पति । १२ वाणिजो गामेसु मनुस्सेहि धम्म सरति । १३. दारका आलोके बुद्धान धम्म पस्सन्ति । १४ भूपालो मनुस्सान गाम ओघेन रक्खति । १५. सो दारको सुरियस्स आलोके तिट्ठति ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. मे धर्म को पढता हूँ । २ वह बुद्ध के धर्म को पढता है । ३. राजा भिखारियों की रक्षा करता है । ४. सिंह गॉव की रक्षा करता है । ५. मै बाढ में सूरज को देखता हूँ । ६. राजा कुमार को देखता है । ७. वह बुद्ध को नमस्कार करता है । ८. तू धर्म को देखते हो । ९. पेड कॉपता है । १०. लडका गॉव में रोता है । ११. भिखारी गॉव को जाता है । १२. लडके बाढ में खड़े होते है । १३. मै राजा से पुत्र मॉगता हूँ । १४. बनिया गॉव में पकाता है । १५. दास राजा से गॉव मॉगता है । १६. पुत्र हँसता है । १७ वह दास रोता है । १८. देर होती है । १९. सिंह गॉव को जाता है । २०. बनिया आलोक में सूरज को देखता है । २१. सब से कुत्ते को मॉगता है । २२. लोक में आदमी होते है । २३. गन्धर्व गॉव में रोते है । २४. राजा लोग दिखाई देते हैं ।

चौथा पाठ

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

फल

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	फलं	फला, फलानि
दुतिया	फलं	फले, फलानि
आलपन	फल, फला	फला, फलानि

शेष रूप 'बुद्ध' शब्द के समान होंगे।

इन अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप भी 'फल' शब्द के समान ही होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चित्त	चित्त	दान	दान
पुञ्ञ	पुण्य	सील	शील
पाप	पाप	धन	धन
रूप	रूप	यान	यान
सोत	कान	लोचन	आँख
घाण	नाक	मूल	जड़
सुख	सुख	कुल	कुल
दुक्ख	दुःख	बल	बल
कारण	कारण	जाल	जाल
मुख	मुख	धञ्ञ	धान
जल	जल	हिरञ्ञ	सोना

सुसान	श्मशान	वन	जंगल
हृदय	हृदय	वत्थ	वस्त्र
नयन	आँख	यान	रथ
ओदन	भात	सोपान	सीढ़ी
मरण	मृत्यु	ञाण	ज्ञान
नगर	नगर	छत्त	छाता
भत्त	भात	उदक	पानी
गेह	घर	पोत्थक	पुस्तक
उय्यान	बाग	सरीर	शरीर

'भ्वादि गण' के इन धातुओं के रूप भी 'पठ' धातु के समान ही होंगे :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
सुच	शोक करना	सोचति, सोचन्ति
जुत	प्रकाश करना	जोतति, जोतन्ति
मुद	प्रसन्न होना	मोदति, मोदन्ति
सुभ	शोभित होना	सोभति, सोभन्ति
रुच	पसन्द करना	रोचति, रोचन्ति
पा	पीना	पिवति, पिवन्ति
दह	जलाना	डहति, डहन्ति
,,	,,	उतति, उहन्ति
जर	पुराना होना	जीरति, जीरन्ति
मर	मरना	मरति, मरन्ति
,,	,,	मीयति, मीयन्ति
रुद	रोना	रोदति, रोदन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१. फल रक्खति। २. फलानि सोभन्ति। ३. फलेसु जलं दिस्सति।

४ भूपालस्स चित्त रोदति । ५ सुनखो ओदन रोचति । ६ नगरे वाणिजो मरति । ७ सुसाने सीहो जल पिवति । ८ गेहे नरो हसति । ९ दारका उय्यानेसु रोदन्ति । १० उय्याने रुक्खा कम्पन्ति । ११ याचको गामे भत्त याचति । १२ पुरिसस्स हदये दुक्ख दिस्सति । १३ अह मुख रोचामि । १४. उरगो वन गच्छति । १५. यक्खो पोत्थकं पठति ।

(ख)

१ पुत्तस्स नयनानि रूपेसु जोतन्ति । २ नगरेसु नरा भत्त पचन्ति । ३ त्व गेहे सुनखस्स मरण पस्ससि । ४. अह धम्मेसु मोदामि । ५ रुक्खस्स मूल जीरति । ६ मुखेन सो नरो जल पिवति । ७ जालेन त्व रूप रुक्खसि । ८ दासा नगरे गेहानि दहन्ति । ९ तुम्हे रुक्ख डहथ १० ते जना गेहे मीयन्ति । ११. यानेहि कुमारा उय्यान गच्छन्ति । १२ असुरा हिरञ्ञ रोचन्ति । १३ सोपानेन रुक्खेसु फलानि पस्सन्ति । १४ पुत्ता छत्तेन जल पिवन्ति । १५ पुञ्ञ सुखस्स कारण भवति ।

(ग)

१ अह कुमारस्स छत्त नगरे पस्सामि २ सो याचको गेहेसु दारकेहि भत्त याचति । ३ यक्खस्स चित्त उय्यानस्स रुक्खेसु भवति । ४ तुम्हे बुद्धस्स धम्म हदये पस्सथ । ५ धम्मो लोके नरान पापेहि रक्खति । ६ ससार मनुस्सा दाने पुञ्ञ पस्सन्ति । ७ दास ! त्व दुक्ख लोके रोचसि ? ८ देव ! अह नगरेसु धन पस्सामि ९ ते सोणा गेहे भत्त रोचन्ति । १० सो नरो गेहे वत्थेन सोभति । ११ दारकस्स ञाण भूपालस्स गेहे पोत्थकेसु जोतति । १२ लोके नरान सरीरेन सुख भवति । १३ चित्तेन ते दुक्ख सरन्ति । १४ सुरियस्स आलोके सो पुरिसो वञ्ञ डहति । १५ सुनखस्स मील लोके दुक्खस्स कारण भवति ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. लड़के की आँख हँसती है । २ म नगर मे भिखारी को देखता हू । ३ बनिया उद्यान के पेड़ो मे फल देखते है । ४ तुम मे वह

धर्मको पसन्द करता है। ५. राजा पुत्र को भिखारी से माँगता है। ६. तू नगर से बाढ देखते हो। ७ मै पुस्तक में प्रसन्न होता हूँ। ८. देवता का शरीर वन में शोभता है। ९. कुत्ते की ऑख दिखाई देती है। १०. मनुष्य लोक में सूरज का आलोक पसन्द करते हैं। ११. पुण्य को राजा लोग छोडते हैं। १२. नगर में गन्धर्व रोता है। १३ वह घर जा रहा है। १४. यक्ष बाग में सूरज के प्रकाश में फलों को देखता है। १५ बनिया घर से भात को मॉगता है। १६. पेढ की जड पुरानी होती है। १७. राजा का घर नगर में जलता है। १८. कुमार की आँख में राजा देखता है। १९. दास बाग के पेडों में फलों को देखते हैं। २०. बुद्ध के धर्म से ससार में सुख होता है। २१ मनुष्यों के लिए पाप दुःख का कारण होता है। २२. मनुष्य नगर में शीलोंमें प्रसन्न होते हैं। २३. बुद्ध का धर्म लोक मे प्रकाशित होता है। २४. पाप से ससार में मनुष्य को दुःख होता है। २५. मैं बुद्ध को नमस्कार करता हूँ। २६. राजा लोग ससार में सुख को देखते हैं। २७. भिखारी नगर में लडकों से पानी माँगता है। २८. यक्ष श्मशान में भात पकाता है। २९ घर में पुरुष दु.ख से शोक करता है। ३०. मै धर्म को नमस्कार करता हूॅ। ३१. वह सघ को नमस्कार करता है। ३२ तुम लोग बुद्ध को नमस्कार करते हो।

पाँचवाँ पाठ

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लता

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	लता	लता, लतायो
दुतिया	लतं	लता, लतायो
ततिया	लताय	लताहि, लताभि
चतुत्थी	लताय	लतानं
पञ्चमी	लताय	लताहि, लताभि
छट्ठी	लताय	लतानं
सत्तमी	लतायं, लताय	लतासु
आलपन	लते	लता, लतायो

इन आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी 'लता' शब्द के समान ही होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अच्छरा	अप्सरा	जटा	जटा
अम्मा[1]	माता	तण्हा	तृष्णा
गाथा	श्लोक	नावा	नौका

---

१ 'अम्मा' शब्द के रूप में आलपन एकवचन में 'लते' की भाँति 'अम्मे' न होकर 'अम्म' ही होता है । जैसे—भोति अम्मा ! किन्तु अन्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व हो जाता है । जैसे—भोति अम्म, अम्मा !

चन्दिमा	चन्द्रमा	पटिपदा	मार्ग
छाया	छाया	मेत्ता	मैत्री
सुणिसा	पतोहू	सभा[1]	सभा
परिसा	परिषद्	साला	घर
भरिया	स्त्री	गीवा	गला
जिह्वा	जीभ	साखा	डाली
माला	माला	तारका	तारा
देवता	देवता	वालुका	बालू
विज्जा	विद्या	कञ्जा	कन्या
वीणा	वीणा	सद्धा	श्रद्धा
पञ्ञा	प्रज्ञा	कङ्खा	सन्देह
माया	माया	सुरा	शराब
सेना	सेना	दिसा	दिशा
भिक्खा	भिक्षा	वनिता	स्त्री

'भ्वादि गण' के इन धातुओं के रूप भी 'पठ' धातु के समान ही होंगे :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिसमें प्रयोग
नि+सद	बैठना	निसीदति, निसीदन्ति
ठा	खड़ा होना	उट्ठहति, उट्ठहन्ति
नि + कम	निकलना	निक्खमति, निक्खमन्ति
सं + आ + दा	ग्रहण करना	समादियति, समादियन्ति

---

१. 'सभा' और 'परिसा' शब्दों का सप्तमी एकवचन में 'सभतिं' और 'परिसतिं' रूप भी होता है। यथा—सभतिं, सभायं, सभाय। परिसतिं, परिसायं, परिसाय।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१ लता रुक्खे कम्पति । २ लतासु फलानि दिस्सन्ति । ३ लताहि रुक्खा सोभन्ति । ४ अच्छरायो हसन्ति । ५ अम्मा पुत्तस्स मुखं पस्सति । ६ सो दारको गाथायो पठति । ७ चन्दिमा लोके जोतति । ८ छायायो गेहे भवन्ति । ९ सुणिसा उट्ठहति । १० नावा जले गच्छति । ११ अहं सील समादियामि । १२ वनितायो सीलानि समादियन्ति । १३ सो भूपालो वने निसीदति । १४ भरिया नगरम्हा निक्खमति । १५ सेनायो गामेसु निसीदन्ति ।

(ख)

१ अम्मा कुमारस्स भत्त पचति । २ गाथायो पोत्थकेसु अहं पस्सामि । ३ मनुस्सानं जटायो कञ्जायो रोचन्ति । ४ लोके नरानं तण्हाय दुक्ख भवति । ५ बुद्धस्स पटिपदं मयं रोचाम । ६ मेत्ताय संसारे जना मोदन्ति । ७ परिसति बुद्धो निसीदति । ८ सभासु भरियायो दिस्सन्ति । ९. लतानं माला रुक्खे कम्पति । १० वीणा दारकस्स गेहे दिस्सति । ११ पञ्ञाय सो नरो जानाति । १२ सालासु दारका भवन्ति । १३ बुद्धा भिक्खाय गामं गच्छन्ति । १४ सा याचका वालुकाय निसीदति । १५ गामे पञ्ञाय जना दुक्खं पस्सन्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१ लताओं से घर शोभता है । २ अप्सरा नगर में दिखाई देती है । ३ मैं जल में चन्द्रमा को देखता हूँ । ४ पेड़ की छाया में मनुष्य बैठता है । ५ वह जटा में भात की रक्षा करता है । ६ स्त्री की तृष्णा दिखाई देती है । ७ नौका जल में जाती है । ८ मार्गों में मनुष्य रोते हैं । ९ जरा से दुःख होता है । १० पत्नी घर में बैठती है । ११ पण्डित

में स्त्री रोती है। १२. जीभ तृष्णा पसन्द करती है। १३. पुत्र के गले मे माला शोभती है। १४. देवता नगर से निकलते हैं। १५. तू विद्या पढते हो। १६. वह वीणा के लिए शोक करता है। १७. मनुष्यों की प्रजा पुण्य देखती है। १८ सेनायें घरों मे जल पीती है। १९. भिखारी भिक्षा के लिए नगर में रोता है। २०. सभाओं में वृद्ध लोग धर्म देखते हैं। २१. लड़के की गर्दन उठती है। २२. पेड़ों से डालियाँ निकलती है। २३. चन्द्रमा के आलोक में तारे शोभा देते हैं। २४. वालू में राजा की नौका जाती है। २५. कन्यायें घर में बैठती हैं। २६. श्रद्धासे धर्म होता है। २७. कन्या को सन्देह होता है। २८ सेना नगर में शराव पीती है। २९. वाग में स्त्री खड़ी होती है। ३०. दिशाएँ शोभा देती हैं।

छठाँ पाठ

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

मुनि

	एकवचन	बहुवचन
पढमा	मुनि	मुनी, मुनयो
दुतिया	मुनिं	मुनी, मुनयो
ततिया	मुनिना	मुनीहि, मुनीभि
चतुत्थी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
पञ्चमी	मुनिना, मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीहि, मुनीभि
छट्ठी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
सत्तमी	मुनिम्हि, मुनिस्मिं	मुनिसु, मुनीसु
आलपन	मुनि, मुनी	मुनी, मुनयो

इन इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भी 'मुनि' शब्द के समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पाणि	हाथ	गण्ठि	गाँठ
मुट्ठि	मुट्ठी	कुच्छि	पेट
सालि	धान	वीहि	धान
व्याधि	रोग	सन्धि	जोड़
रासि	ढेर	दीपि	चीता
इसि[1]	ऋषि	मणि	मणि

---

१ 'इसि' शब्द का रूप पढमा एकवचन में विकल्प से 'इसे' होता है और दुतिया बहुवचन में भी। जैसे—समणे ब्राह्मणे वन्दे सम्पन्नचरणे इसे।

गिरि	पहाड	रवि	सूरज
कवि	कवि	कपि	बन्दर
असि	तलवार	मसि	स्याही
निधि	खजाना	विधि	विधि
अहि	साँप	किमि	कीडा
पति	पति	अरि	शत्रु
जलनिधि	समुद्र	गहपति	गृहपति
अधिपति	राजा	नरपति	राजा
सारथि	सारथी	जलधि	समुद्र
ञाति	रिस्तेदार	अग्गि[1]	आग

'रुधादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
रुध	रोकना	रुन्धति, रुन्धन्ति
भुज	खाना	भुञ्जति, भुञ्जन्ति
कत	काटना	कन्तति, कन्तन्ति
गह	पकडना	गण्हति, गण्हन्ति
छिद्	काटना	छिन्दति, छिन्दन्ति
बध	बाँधना	बन्धति, बन्धन्ति
भिद्	फोडना	भिन्दति, भिन्दन्ति
मुच	छोडना	मुञ्चति, मुञ्चन्ति
युज	जोडना	युञ्जति, युञ्जन्ति
लिप	लेपना	लिम्पति, लिम्पन्ति
सिच	सींचना	सिञ्चति, सिञ्चन्ति
हिंस	हिंसा करना	हिंसति, हिंसन्ति

---

१. 'अग्गि' शब्द का रूप पठमा एकवचन में विकल्प से 'अग्गिनि' भी होता है।

अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद कीजिए.—

(क)

१ मुनि निधि गण्हति २ मुनिनो मुट्ठिम्हि मणि सोभति। ३ सो मुनिना रुक्ख छिन्दति। ४ जलनिधिम्हि नावा गच्छति। ५ सारथि याने निसीदति। ६ दारको वीहि छिन्दति। ७ अहं सालि गण्हामि। ८ व्याधि मनुस्से हिंसति। ९ सो पाणिना दारक गण्हति। १०. कवि गण्ठि मुञ्चति। ११ भरियाय कुच्छिम्हि व्याधि भवति। १२ वाणिजस्स वाहयो नरा कन्तन्ति। १३ नावाय सन्धि पस्सन्ति। १४ वीहीन रासि अधिपति वन्दति। १५ अहि गामे जल पिवति।

(ख)

१ इसिना पुत्तो धम्म पठति। २ गिरिम्हि इमयो रुक्ख सिञ्चन्ति। ३ कविना अम्मा गेह भिन्दति। ४ दासो असिना गीव छिन्दति। ५ नरपति निधि रक्खति। ६ पति भरिय गण्हति। ७ अधिपतयो दासे हसन्ति। ८ सारथीहि नरा वन गण्हन्ति। ९ जातयो मायासु लिम्पन्ति। १० दीपयो वनेसु मुनयो मुञ्चन्ति। ११ मणयो गेहेसु जोतन्ति। १२ रवि मनुस्सान आलोकन सिञ्चति। १३. कपयो वने फलानि भुञ्जन्ति। १४ असि वत्थ छिन्दति। १५ नरा विधिना धम्म समादियति। १६ किमयो फलेसु दिस्सन्ति। १७ अरयो मन्दिर भिन्दन्ति। १८ गहपतिनो भरिया गण्ठि मुञ्चति। १९ नरपति धम्म युञ्जति। २० अग्गि गेह गण्हति।

पालि मे अनुवाद कीजिए —

पर वस्त्र दिखाई देता है। १० हम लोग धान बाँध रहे है। ११. जोडों को तुम लोग काटते हो। १२ धन के ढेर से भिखारी माँगता है। १३. ऋषि लोग फलों को खाते हैं। १४. वह पहाड पर पानी रोकता है। १५ कवि की स्त्री वस्त्र को काटती है। १६. तल्वार से सेनाएँ मनुष्यों की हिसा करती हैं। १७. साँप खजाने की रक्षा करता है। १८. पति स्त्री को छोडता है। १९. समुद्र में नौका जाती है। २०. राजा लोग दु:ख में रोते हैं। २१ सारथी पेड को काटता है। २२. रिस्तेदार कन्या को देखते है। २३. चीता कुत्तों को पकडता है। २४. मणि से आलोक निकलता है। २५ सूरज ससार में प्रकाश छोडता है। २६. बन्दर पेड़ों पर फलों को खाते है। २७. वह स्याही को वस्त्र में लेपता है। २८. राजा विधि से घर छोड़ता है। २९. कीडे फलों मे होते है। ३०. शत्रु राजा को बाँधते हैं। ३१ गृहपति की स्त्री मणि को फोडती है। ३२ आग नगर को घेरती है।

सातवाँ पाठ

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अट्ठि (=हड्डी)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अट्ठि	अट्ठीनि, अट्ठी
दुतिया	अट्ठिं	अट्ठीनि, अट्ठी
आलपन	अट्ठि	अट्ठीनि, अट्ठी

शेष रूप 'मुनि' शब्द के समान होंगे।

इन शब्दों के रूप भी 'अट्ठि' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
दधि	दही	सप्पि	घी
वारि	पानी	सत्थि	जाँघ
अक्खि	आँख	अच्चि	लपट

'दिवादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार में होंगे —

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
दिव	खेलना	दिब्बति, दिब्बन्ति
नस्स	नष्ट होना	नस्सति, नस्सन्ति
युध	लड़ाई करना	युज्झति, युज्झन्ति
रुच	अच्छा लगना	रुच्चति, रुच्चन्ति
कुध	गुस्सा होना	कुज्झति, कुज्झन्ति
कुप	कोप करना	कुप्पति, कुप्पन्ति
गा	गाना	गायति, गायन्ति

घा	सूँघना	घायति, घायन्ति
छिद्	टूटना	छिज्जति, छिज्जन्ति
झा	ध्यान करना	झायति, झायन्ति
नहा	नहाना	नहायति, नहायन्ति
वुध	समझना	वुज्झति, वुज्झन्ति
लुभ	लोभ करना	लुब्भति, लुब्भन्ति
सम	शान्त होना	सम्मति, सम्मन्ति
सिव	सीना	सिब्बति, सिब्बन्ति
सुध	शुद्ध होना	सुज्झति, सुज्झन्ति
सुस	सूखना	सुस्सति, सुस्सन्ति
हन	मारना	हञ्ञति, हञ्ञन्ति

कुछ आवश्यक शब्द

शब्द	अर्थ
अत्थि	है
नत्थि	नहीं है
सन्ति	हैं
न	नहीं

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१. कुमारस्स सत्थिनो अट्ठीनि छिज्जन्ति । २. ते सुनखस्स अट्ठिना दिब्बन्ति । ३. जलनिधिम्हि वारि नस्सति । ४. अट्ठीसु व्याधि अत्थि । ५. अग्गिनो अच्चि गेहं डहति । ६. अक्खीहि सुरियं पस्सति । ७. सुनखो दधिं रोचति । ८. सप्पिस्मिं जलं अत्थि । ९ सेना नगरे युज्झति । १०. भूपालस्स भत्तं रुच्चति । ११. याचको दारकेन कुप्पति । १२. अहं न कुज्झामि । १३. त्वं धम्मं गायसि । १४. सो उदकं घायति । १५ रुक्खो ओघेन छिज्जति ।

(ख)

१ मुनयो वनेसु झायन्ति। २ वनितायो उदके नहायन्ति। ३ तुम्हे धम्मं बुज्झथ। ४ यक्खस्स चित्तं उय्याने लुब्भति। ५ मुनिनो व्याधयो सम्मन्ति। ६ भरिया पुत्तस्स वत्थं सिब्बति। ७ मुनयो पुञ्ञेन मुज्झन्ति। ८ सा वनिता दुक्खेन सुस्सति। ९. व्याधि मनुस्से हञ्ञति। १० लोके सुखं नत्थि। ११ गामे वाणिजस्स अग्गि अत्थि। १२ नृपालस्स भरियायो गेहे सन्ति। १३ सो नरो याचको न भवति। १४ मयं धम्मं वदाम। १५ तुम्हे दवीनि मुञ्चथ। १६ अहं बुद्धं सरणं गच्छामि। १७ त्वं धम्मं सरणं गच्छसि। १८ सो सङ्घं सरणं गच्छति। १९ लोके सङ्घस्स सरणे सुखं अत्थि। २० ते मुनयो धम्मेन न सुज्झन्ति।

पालि मे अनुवाद कीजिए.—

१ लड़के की हड्डी टूटती है। २ दास हड्डी से खेलता है। ३ हड्डी में रोग दिखाई देता है। ४ हड्डियों में मैं नहीं खेलता हूँ। ५ दही में पानी है। ६ जल में साँप नहीं है। ७ आँख से सूरज नहीं दिखाई देता है। ८. लपट घर में उठती है। ९ घी घर में है। १० जाँघ की हड्डी टूटती है। ११ रोग नष्ट होते हैं। १२ लड़के घर में लड़ाई करते हैं।

आठवाँ पाठ

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रत्ति (=रात)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो
दुतिया	रत्तिं	रत्ती, रत्तियो, रत्यो
ततिया	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
चतुत्थी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
पञ्चमी	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
छट्ठी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
सत्तमी	रत्तियं, रत्यं, रत्या, रत्तिं, रत्तो, रत्तिया	रत्तीसु, रत्तिसु
आलपन	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो

इन शब्दों के रूप भी 'रत्ति' शब्द के समान ही होंगे :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
युत्ति	युक्ति	तित्ति	तृप्ति
वुत्ति	जीवन-वृत्ति	खन्ति	सहनशीलता
कित्ति	कीर्ति	सन्ति	शान्ति
मुत्ति	मुक्ति	सिद्धि	सिद्धि
सुद्धि	शुद्धि	बोधि	ज्ञान
इद्धि	ऋद्धि	भूमि	भूमि
वुद्धि	वृद्धि	जाति	जन्म

वुद्धि	वृद्धि	पीति	प्रीति
तन्हि	तृष्णा	सन्धि	मेल
कोटि	करोड	दिट्ठि	दृष्टि
वुट्ठि	वृष्टि	तुट्ठि	सन्तोष
यट्ठि	लाठी	पालि	पंक्ति
पन्ति	पंक्ति	सति	स्मृति
धूलि	धूल	अंगुलि	अंगुली
अटवि	जंगल	असनि	बिजली
आलि	सखी	चुति	मृत्यु
दुन्दुभि	बाजा	पत्ति	पैदल सेना
कन्ति	शोभा	दोणि	डोंगी
नाभि	नाभी	रंसि	रश्मि
केलि	क्रीडा	गति	गमन
खिति	धीरज	युवति	तरुणी
रुचि	रुचि	सुगति	अच्छी गति

'तुदादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे —

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
तुद	पीडा करना	तुदति, तुदन्ति
फुस	छूना	फुसति, फुसन्ति
मुस	चुराना	मुसति, मुसन्ति
लिख	लिखना	लिखति, लिखन्ति
सुप	सोना	सुपति, सुपन्ति
प+विस	घुसना	पविसति, पविसन्ति
विद	जागना	विन्दति, विन्दन्ति
फुर	फड़कना	फुरति, फुरन्ति

नुद	दूर करना	नुदति, नुदन्ति
खिप	फेंकना	खिपति, खिपन्ति
गिल	निगलना	गिलति, गिलन्ति
वि + किर	छींटना	विकिरति, विकिरन्ति
नि + गिर	निगलना	निगिरति, निगिरन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

(क)

१. रत्तिय कवि पोत्थक लिखति। २. अटविय दीपयो भवन्ति। ३. रत्तिय चन्दिमाय आलोको गेहे भवति। ४. युत्तिया सा वनिता भत्त गिलति। ५. कुमारस्स वुत्तिय कङ्खा अत्थि। ६. मुनिनो कित्ति लोके अत्थि। ७. अह व्याधिना दुक्खं फुसामि। ८ नरा ससारे मुत्तिं चजन्ति। ९. गेहेसु तित्ति नत्थि। १० दारको खन्तिया सुख विन्दति। ११. अह सन्तिं विन्दामि। १२ मुनिनो सिद्धिया कङ्खा नत्थि। १३. सुद्धीहि जना सुज्झन्ति। १४. इद्धिया इसयो नगर गच्छन्ति। १५. धनेन लोके वुद्धि भवति।

(ख)

१. कुमारो यट्ठीहि सुनख नुदति। २. युवतिया पतिनो अम्मा भत्तं खिपति। ३ दोणि जलधिम्हि विकिरति। ४. सो दारको दधि निगिरति। ५. भूपालो गेह पविसति। ६. युवति वने सुपति। ७. केलिय वाणिजो दुन्दुभि मुसति। ८ यक्खो दुक्ख फुसति। ९. सारथिनो कुच्छिस्मिं तुदति। १० अगुलीसु व्याधि नत्थि। ११. मय वोधि फुसाम। १२ सो बुद्ध न सरति। १३. वनिता धम्म वदति। १४. इसयो अटवीसु सन्ति। १५. गेहेसु दारका भत्त भुञ्जन्ति। १६. अम्मा दधि गण्हति। वाणिजो पोत्थक लिखति।

पालि मे अनुवाद कीजिए :—

१ रात मे माता पुत्र को छूती है। २ ऋषि लोग जगल में घुसते है। ३ जीवन-वृत्ति के लिए मे भात खाता हूँ। ४ यक्ष युक्ति जानता है। ५ कीर्ति से सुख मिलता है। ६ दास घर में दुःख भोगता है। ७ लडका धन छाँटता है। ८ स्त्री घर मे सोती है। ९ लता पेड से निकलती है। १० वृद्ध पुस्तक नहीं लिखते है। ११ युवतियाँ लाठियों को देखती है। १२. सेना की पक्ति नगर मे जाती है। १३. जगल से चीता नगर मे प्रवेश करता है। १४ लडके पक्ति मे खडे है। १५ मुनि लोग ध्यान करते है। १६ सूरज की रश्मि राजा को स्पर्श कर रही है। १७ वृष्टि का पानी घर को सींचता है। १८ धूल घर मे बिखर रही है। १९ स्त्री की सखियाँ गाती है। २० जगल में सिह दुःख भोगता है। २१ साँपो का राजा मरता है। २२ आदमी को तुष्टि नहीं होती है। २३ वह लाठी से बन्दर को पकडता है। २४ बिजली के आलोक मे आदमी दिखाई देता है। २५ डोगी समुद्र में प्रवेश कर रही है। २६ सुगति मे दुःख नहीं है। २७ लडके की नाभी मे राग है। २८ मे घर जा रहा हूँ।

नवाँ पाठ

ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

दण्डी (=सन्यासी)

	एकवचन	वहुवचन
पठमा	दण्डी	दण्डी, दण्डिनो
दुतिया	दण्डिनं, दण्डिं	दण्डी, दण्डिनो, दण्डिने
ततिया	दण्डिना	दण्डीहि, दण्डीभि
चतुत्थी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
पञ्चमी	दण्डिना, दण्डिस्मा, दण्डिम्हा	दण्डीहि, दण्डीभि
छट्ठी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
सत्तमी	दण्डिनि, दण्डिम्हि, दण्डिस्मिं	दण्डिसु, दण्डीसु
आलपन	दण्डि, दण्डी	दण्डी, दण्डिनो

इन शब्दों के रूप भी 'दण्डी' शब्द के ही समान होंगे :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
करी	हाथी	चक्की	चक्रवाला
कामी	कामी	चागी	त्यागी
कुट्ठी	कोढी	जटी	जटाधारी
कुसली	कुशली	ञाणी	ज्ञानी
गणी	गणवाला	दन्ती	हाथी
दाठी	बाघ	दीघजीवी	दीर्घजीवी
धम्मवादी	धर्मवादी	धम्मी	धर्मी

पक्खी	पक्षी	पापकारी	पापी
बली	बल्वान्	भागी	भागवाला
भोगी	भोग करनेवाला	माली	माली
मूसली	मूसल धारण करनेवाला	योगी	योगी
वम्मी	बख्तरवाला, सिपाही	संघी	संघवाला
सामी	स्वामी	सिखी	मोर
सीघयायी	शीघ्र जानेवाला	सुखी	सुखी
मन्ती	मन्त्री	धजी	ध्वजावाला
छत्ती	छत्र धारण करनेवाला		

'तनादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
तन	फैलाना	तनोति, तनोन्ति
सक	सकना	सक्कोति, सक्कोन्ति
वन	माँगना	वनोति, वनोन्ति
मन	जानना	मनोति, मनोन्ति
आप	पाना	आपोति, आपोन्ति
कर	करना	करोति, करोन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

१ दाठी सग्ग गच्छति। २ करिनो कदलियो भुञ्जन्ति। ३ कामी पुरिसा कटे (=चटाइयाँ) तनोन्ति। ४ कुट्ठी आसने निसीदित्वा भत्त खादति। ५ कुसली पुञ्ञ कत्वा सग्ग आपोति। ६ गणिनो जनान [illegible] [illegible]। ७ चक्की [illegible] [illegible]। ८ चागी धनानि न [illegible]। ९ [illegible] [illegible] [illegible] न वमन्ति। १० ञाणी पुरिसा [illegible] [illegible]। ११ [illegible] [illegible] न [illegible]। १२ दाठी मिगे [illegible]

खादन्ति। १३. पक्खिनो आकासे उड्डन्ति। १४. बलिनो दुब्बले जने न पहरन्ति। १५. भोगी भोगे इच्छति। १६ मूसली दण्डीहि न भायति। १७. वम्मी भूपाल रक्खति। १८ सामी भरिय अप्पोति। १९ सीघयायी खिप्पं नगर गच्छति। २० सिखी पक्खे पसारेत्वा भित्तिय नच्चति। २१ योगी झान करोति। २२ सुखी सुख मनोति। २३ धजी युद्धभूमिं गन्त्वा विराजति। २४ माली पुप्फ गण्हति। २५ पापकारी निरय उप्पज्जति।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. दण्डी गॉव में जाता है। २. सिपाही युद्ध करता है। ३. राजा बलवान् मनुष्यों को चाहता है। ४ हाथी गन्दगी (= मलानि) नहीं फैलाते हैं। ५. कामी धन चाहता है। ६ कोढी भीख मॉगता है। ७ कुशली पुण्य करता है। ८. गणवाला गण को बढाता है। ९ चक्रवाला पानी पीता है। १० त्यागी पुरुष ग्राम को छोडता है। ११. जटाधारी लोग वन में घूमते हैं। १२. ज्ञानी कभी (= कदापि) रोते नहीं है। १३. हाथी जगलों में विचरण करते हैं। १४ बाघ हाथी को मारते है। १५ पक्षी आकाश में शब्द करते है। १६ सिपाही नगर में टहलता है (= चङ्कमति)। १७. मन्त्री राजा से धन मॉगता है। १८ मोर दीवार पर बैठा है। १९ ध्वजाधारी आगे-आगे (= पुरतो) जाता है। २०. योगी आसन पर ध्यान करता है। २१. माली माला बनाता है। २२. पापी लोग पाप फैलाते है। २३. धर्मी धर्म बढाते है। २४. सुखी सुख पाते है। २५. स्वामी उद्यान में घर बनाते हैं।

दसवाँ पाठ

ईकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सुखकारी (= सुख देने वाला)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी
दुतिया	सुखकारिं	सुखकारीनि, सुखकारी
आलपन	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

शेष रूप 'दण्डी' शब्द के समान होंगे।

'चुरादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे।—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस एकवचन में प्रयोग
अज्ज	कमाना	अज्जेति, अज्जयति
ईर	हिलना	ईरेति, ईरयति
कण्ण	सुनना	कण्णेति, कण्णयति
कथ	कहना	कथेति, कथयति
कित्त	कीर्तन करना	कित्तेति, कित्तयति
गण	गिनना	गणेति, गणयति
गन्थ	गूँथना	गन्थेति, गन्थयति
चिन्त	विचारना	चिन्तेति, चिन्तयति
चुण्ण	चूर-चूर करना	चुण्णेति, चुण्णयति
चुर	चुराना	चोरेति, चोरयति
छड्ड	फेंकना	छड्डेति, छड्डयति
ञप	जनाना	ञापेति, ञापयति
पिण्ड	पिण्ड बनाना	पिण्डेति, पिण्डयति

पुस	पोसना	पोसेति, पोसयति
पूज	पूजा करना	पूजेति, पूजयति
मन्त	सलाह करना	मन्तेति, मन्तयति
तक्क	तर्क करना	तक्केति, तक्कयति
तीर	पूरा करना	तीरेति, तीरयति
दिस	उपदेश करना	देसेति, देसयति
वन्द	वन्दना करना	वन्देति, वन्दयति
वण्ण	प्रशसा करना	वण्णेति, वण्णयति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सुखकारि धन अज्जेति। २. सुखकारिनो खणं (=क्षण) न गणेन्ति। ३. वायुना रुक्खो ईरेति। ४. ते धम्म कण्णेन्ति। ५. भूपालो नीति कथेति। ६. सुनखो भत्त चोरेति। ७. दारका पुप्फानि गन्थेन्ति। ८ इत्थी सक्खर चुण्णेति। ९. भिक्खु अत्तनो किलेसे (=क्लेशों को) झापेति। १०. सो भत्त पिण्डेति। ११. वाणिजो भरिय पोसेति। १२. भिक्खवो पुप्फेहि बुद्ध पूजेन्ति। १३. ते रत्तिय मन्तेन्ति। १४. अह तुम्हे वन्दामि। १५. बुद्धो धम्म देसेति।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. लोग धर्म की वन्दना करते हैं। २. चोर धन को चुराते हैं। ३. भिक्षु धर्म का उपदेश करता है। ४. उपासक भोजन-दान देते हैं। ५ लडका भिक्षु से तर्क करता है। ६. भिखारी धन कमाता है। ७. वह अपना (=अत्तनो) वस्त्र फेकता है। ८. सिपाही किसान की झोंपडी (=कुटि) जलाता है। ९. मैं अपना काम पूरा करता हूँ। १०. पेड का पत्ता (=पण्ण) हिल्ता है। ११. लोग पण्डित की प्रशसा करते हैं। १२. विद्वान् (=पण्डिता) सलाह करते हैं। १३. स्वामी स्त्री को पोसता है। १४. वे बुद्ध का कीर्तन करते हैं। १५. हाथी घर को चूर-चूर करता है।

ग्यारहवाँ पाठ

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इत्थी (= स्त्री)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	इत्थी	इत्थी, इत्थियो
दुतिया	इत्थियं, इत्थिं	इत्थी, इत्थियो
ततिया	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
चतुत्थी	इत्थिया	इत्थीन
पञ्चमी	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
छट्ठी	इत्थिया	इत्थीनं
सत्तमी	इत्थियं, इत्थिया	इत्थीसु
आलपन	इत्थि	इत्थी, इत्थियो

इन शब्दों के भी रूप 'इत्थी' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
नदी[1]	नदी	पाटली	एक वृक्ष

१ पठमा और दुतिया के बहुवचन में 'नदी' शब्द के रूप नज्जायो, नदियो हो जाते हैं। सभी विभक्तियोंमें रूप इस प्रकार होते हैं :-

	एक वचन	बहुवचन
पठमा	नदी	नदी, नदियो, नज्जायो, नज्जो
दुतिया	नदिं, नदियं, नज्जं	नदी, नदियो, नज्जायो, नज्जो
ततिया	नदिया, नज्जा	नदीहि, नदीभि
चतुत्थी	नदिया, नज्जा	नदीन
पञ्चमी	नदिया, नज्जा	नदीहि, नदीभि

मही	पृथ्वी	नारी	स्त्री
वेतरणी	वैतरणी	कुमारी	कुमारी
वापी	बौली, जलाशय	तरुणी	तरुणी
वारुणी	शराब	किन्नरी	किन्नर-स्त्री
ब्राह्मणी	ब्राह्मणी	नागी	नागिन
सखी	सहेली	देवी	देवी
गन्धब्बी	गन्धर्व-स्त्री	यक्खी	यक्षिणी
अजी	बकरी	मिगी	मृगी
वानरी	बन्दरी	सूकरी	सूअरी
सीही	सिंहनी	हंसी	हंसिनी
कुक्कुटी	मुर्गी	भगिनी	बहिन
कदली	केला	घटी	गगरी
दासी	दासी	गावी	गाय
काकी	कौवी	राजिणी	रानी

'स्वादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
सु	सुनना	सुणोति, सुणोन्ति
खी	क्षय होना	खिणोति, खिणोन्ति
वु	ढँकना	वुणोति, वुणोन्ति
गि	शब्द करना	गिणोति, गिणोन्ति
सक	सकना	सक्कोति, सक्कोन्ति
,,	,,	सक्कुणोति, सक्कुणोन्ति
प + आप	प्राप्त करना	पापुणोति, पापुणोन्ति

छट्ठी	नदिया, नज्जा	नदीनं
सत्तमी	नदिया, नज्जा, नज्जं	नदीसु
आलपन	नदि	नदी, नदियो, नज्जायो, नज्जो

निपात

जिन शब्दों के रूप लिंग, विभक्ति और वचन के कारण परिवर्तित नहीं होते, उन्हें **अव्यय** कहते हैं। अव्यय पालि में पाँच प्रकार[1] के होते हैं। उनमें एक 'निपात' होता है। नीचे कुछ **निपात**[2] शब्द दिए जाते हैं —

निपात	अर्थ	निपात	अर्थ
इत्थ	ऐसा	यस्मा	जिस कारणसे
एवं	ऐसा	वत	निश्चय में
कथ	कैसा	एकक्खत्तुं	एक बार
इति	इति = ऐसा	एकधा	एक प्रकार से
इव	तरह	एव	ही
सद्धिं	साथ	वा	या
तस्मा	इसलिए	न	नहीं
मा	मत	खिप्प	शीघ्र
सनिक	धीरे धीरे	च	और
खलु	निश्चय से	विय	भाँति
अत्र	यहाँ	अद्धा	निश्चय से
अधुना	इस समय	अल	बस
आम	हाँ	इध	यहाँ
इदानि	इस समय	तदा	तब
सदा	हमेशा	अज्ज	आज
सुवे	आगामी कल	हीयो	बीता हुआ कल
यदा	जब	कदा	कब
एकदा	एक बार	सब्बदा	हमेशा

१ देखिये, तीसवाँ पाठ।

२ निपात शब्दों के लिए देखिये, तीसवाँ पाठ भी।

पच्छा	पीछे	पुरा	पहले
सायं	शाम	पातो	प्रातः
परसुवे	आगामी परसों	परह्वीयो	बीता हुआ परसों
इह	यहाँ	उद्धं	ऊपर
उपरि	ऊपर	एतरहि	अब
एत्तावता	अब तक	एत्थ	यहाँ
अपि	भी	कच्चि	क्या
कदाचि	शायद	कह	कहाँ
किं	क्या	कुहिं	कहाँ
कुत्र	कहाँ	तत्थ	वहाँ
तत्र	वहाँ	तथेव	वैसे ही
बहिद्धा	बाहर	मा	मत
यत्र	जहाँ	यथा	जैसे
याव	जब तक	सकिं	एक बार
सह	साथ	साधु	ठीक
सेय्यथापि	जैसे	हेट्ठा	नीचे

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. इत्थी कथ सुणोति ? २. नदी एव सन्दति। ३. मही सनिकं खीयति। ४. वेतरणी मनुस्से पीळेति। ५. वापिय इत्थियो नहायन्ति। ६. पाटलिरुक्खे फलानि सन्ति। ७. नारियो गेहे एव सदा वसन्ति। ८. कुमारी पोत्थक पठति। ९. तरुणिया सद्धिं दारका गच्छन्ति। १०. उम्मत्तका जना वारुणिं पिवन्ति। ११. एकक्खत्तु ब्राह्मणी वाराणसिं गच्छति। १२. अज्ज सखी धन पापुणोति। १३. तुम्हे मा कुप्पथ। १४. वाणिजा वसु खिप्प वुणोन्ति। १५. गन्धब्बी पब्बते गीत गायति। १६. अजी रुक्खान पल्लवे खिणोति। १७. वानरी मनुस्से विय कीळति। १८.

गोहियो अटवीसु वसन्ति। १९ भगिनी दारके पोसेति। २० त्वं कुहिं गच्छसि? २१ अहं नगरं गच्छामि। २२ त्वं कुतो आगच्छसि? २३ अहं वाराणसिया आगच्छामि। २४ घटी खलु दारकेन भिन्ना। २५ आम, तेन दारकेन एव भिन्ना।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

बारहवाँ पाठ

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भिक्खु (=भिक्षु)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	भिक्खु	भिक्खू, भिक्खवो
दुतिया	भिक्खुं	भिक्खू, भिक्खवो
ततिया	भिक्खुना	भिक्खूहि, भिक्खूभि
चतुत्थी	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खूनं
पञ्चमी	भिक्खुना, भिक्खुस्मा, भिक्खुम्हा	भिक्खूहि, भिक्खूभि
छट्ठी	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खूनं
सत्तमी	भिक्खुस्मिं, भिक्खुम्हि	भिक्खुसु, भिक्खूसु
आलपन	भिक्खु	भिक्खू, भिक्खवे, भिक्खवो

इन शब्दों के भी रूप 'भिक्खु' शब्द के ही समान होंगे :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सेतु	पुल	केतु	पताका
भानु	सूर्य	राहु	राहु
उच्छु	ईख	वेलु	बाँस
मच्चु	मृत्यु	सिन्धु	समुद्र
मधु	मधु	मेरु	सुमेरु पर्वत
सत्तु	शत्रु	कारु	विश्वकर्मा
हेतु	कारण	जन्तु	जानवर

पटु	चतुर	बन्धु	भाई
संकु	कील	फरसु	कुल्हाडी
रेणु	पराग	गरु	गुरु
बाहु	हाथ		

'ज्यादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे :-

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
अस	खाना	अस्नाति, अस्नन्ति
चि	चुनना	चिनाति, चिनन्ति
ञा	जानना	जानाति, जानन्ति
थु	प्रशंसा करना	थुनाति, थुनन्ति
धू	धुनना	धुनाति, धुनन्ति
पू	पवित्र करना	पुनाति, पुनन्ति
लू	काटना	लुनाति, लुनन्ति
सि	सीना	सिनाति, सिनन्ति

कुछ आवश्यक पुल्लिङ्ग शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अस्स	घाटा	आवाट	गड्ढा
अज	बकरा	कुञ्जर	हाथी
मिग	हिरण	गन्थ	ग्रन्थ
उरग	साँप	जनक	पिता
कस्सक	किसान	तच्छक	बढ़ई
गद्रभ	गधा	तापस	तपस्वी
भमर	भौंरा	कुक्कुट	मुर्गा
मार	कामदेव	वम्मिक	वल्मीक
बिळार	[illegible]	चोर	चोर
पदीप	दीपक	आहार	भोजन

वेज्ज	वैद्य	सिगाल	गीदड़
सूद	भण्डारी	मग्ग	मार्ग
लेखक	लेखक	मञ्च	चारपाई

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१. भिक्खु अस्स पस्सति। २. सेतुम्हा अजो वारिं पिवति। ३. भिक्खवो विहारे भत्त अस्नन्ति। ४. भानु नभे रोचति। ५. दारका उच्छु खादन्ति। ६. भिक्खुनो मञ्चु दिस्सति। ७. केतु गेहे अत्थि। ८. राहुस्स पुत्तो सीस धुनाति। ९ वेलूहि सत्तु हिंसति। १०. सिगाला मधुं अस्नन्ति। ११. बन्धु नरपति थुनाति। १२. फरसुना दारका रुक्ख छिन्दन्ति। १३. सकुना खेत्त खनन्ति। १४' रेणुम्हि रज नत्थि। १५. गरुनो भरिया वत्थ सिनाति।

(ख)

१. अहं भमर जानामि। २. त्व मधु पिवसि। ३. वेज्जो मग्गा वेलु चिनाति। ४. बाहुना सो गज पहरति। ५. माता भत्त भुञ्जति। ६. रेणुम्हा भमरो गन्ध गण्हति। ७. सत्तु भानु पस्सति। ८. भूपालो गेह गच्छति। ९. सो गेहे कन्दति। १०. ते दारक थुनन्ति। ११. तुम्हे हेतु इच्छथ। १२. मय वत्थ सिनाम। १३. सूदो भत्त भुञ्जति। १४. मय सकूहि कूप खनाम। १५. तुम्हे राहु पस्सथ। १६. उच्छु जना खादन्ति

पालि में अनुवाद कीजिए

१. भिक्षु पुल पर जाता है। २ सूरज चमकता है। ३ ऊख को लड़के खाते हैं। ४. मृत्यु आ रही है। ५. केतु दिखाई नहीं देता। ६. बाँस को आदमी काटता है। ७. समुद्र में नौका (=नावा) जाती है। ८ मधु मीठा (= मधुर) होता है। ९. शत्रु वस्त्र सीता है। १०. लोग भात खाते हैं।

११ हेतु मे सखार होता है। १२ चतुर लोग तुमको जानते है। १३. कीलों से पर्वत खोदते है। १४ पराग को लडके चुन रहे है। १५ मै हाथ से कीलों को चुनता हूँ। १६ सुमेरु पर्वत पर देवता रहते है। १७ विश्वकर्मा ग्रंथ को पवित्र करता है। १८ विश्वकर्मा तुम्हारी प्रशसा करता है। १९ जानवर घर मे रहते है। २० भाई भात खाता है। २१ कुल्हाडी से पेड को काटते है। २२ गुरु लडको की प्रशसा करता है। २३ तुम बैठो (=निसीदाहि)। २४ मै कीलों को चुनता हूँ। २५ भारे मधु पाते है। २६ लडके ग्रन्थ पढते है। २७ सब लोग मधु पीते है। २८ मै भाई के घर जाता हूँ। २९ वह मेरे घर आता है। ३० आज मै घर जा रहा हूँ।

तेरहवाँ पाठ

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

आयु

	एकवचन	वहुवचन
पठमा	आयु	आयूनि, आयू
दुतिया	आयुं	आयूनि, आयू
आलपन	आयु	आयूनि, आयू

शेष रूप 'भिक्खु' शब्द के समान होंगे।

इन शब्दों के रूप भी 'आयु' शब्द के ही समान होंगे.—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चक्खु	आँख	तिपु	राँगा
वसु	धन	मधु	मधु
धनु	धनुष	वत्थु	वस्तु
दारु	लकडी	जतु	लाह
अम्बु	पानी	अस्सु	आँसू
जानु	घुटना	सिग्गु	सहजन
हिंगु	हींग	वपु	शरीर

'क्यादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे.—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
की	खरीदना	किणाति, किणन्ति
वि+की	बेचना	विक्किणाति, विक्किणन्ति

गि	शब्द करना	गिणाति, गिणन्ति
वु	ढँकना	वुणाति वुणन्ति
सक	सकना	सक्कणाति, सक्कणन्ति
सु	सुनना	सुणाति, सुणन्ति

अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद कीजिए.—

(क)

१ चक्खु वुणाति। २ वमु रक्खति। ३ आयु पस्सति। ४. धनुना मिग हिंसति। ५ दारूनि छिन्दति। ६ अम्बूनि गण्हन्ति। ७ जानुनि रुजति। ८ हिगु भुञ्जन्ति। ९ तिपुना पहरति। १० मधु किणाति। ११. वत्थूनि विकिणन्ति। १२ जतु गिणाति। १३ अस्सूनि पतन्ति। १४ सिग्गु पुप्फति। १५ वपु पुनाति।

(ख)

१ अहं चक्खुना रूप पस्सामि। २ त्व वमु मुञ्चसि। ३ सो गेहे सद्द सुणाति। ४ दारको वत्थ भिन्दति। ५ सो पुरिसो सीस वुणाति। ६ ते गेह विकिणन्ति। ७ ते दारकान सद्द सुणन्ति। ८ जना गजे किणन्ति। ९ रूपमाला गीत सुणाति। १० कुमारो अत्तनो पोत्थक विकिणाति। ११ मय भमरे पस्साम। १२ अज्ज मेघा दिस्सन्ति। १३ अहं भत्त न भुञ्जामि। १४ त्व कस्मा कन्दसि? १५ सो पोत्थक किणाति।

पालि में अनुवाद कीजिए .—

१ [illegible] ढकता है। २ [illegible] ढकता है। ३ कुत्ता लकड़ी पकड़ता है। ४ [illegible] सुनता है। ५ [illegible] मृग को मारता है। ६ लकड़ियों को [illegible] है। ७ [illegible] में [illegible] रहते हैं। ८ घुटने में दर्द है। ९ रोग

को वस्त्र से ढँकता है। १०. राँगा चमकता है। ११. मधु को लड़के पसन्द करते हैं। १२. वस्तुओं को हम देखते हैं। १३ लाह घर में विद्यमान है। १४. आँसू गिरता है। १५. सइजन मार्ग में मौजूद है। १६. शरीर शुद्ध होता है। १७. वह शब्द करता है। १८. मैं रोता हूँ। १९. तुम जाते हो। २०. वह प्रकाश करता है। २१. घर में धन है। २२. पेड सूख रहा है। २३. जाँघ दर्द करती है। २४. वस्त्र नष्ट होता है। २५. पेड टूटता है।

चौदहवाँ पाठ

क्रिया, अनागत काल

'पठ' धातु

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	पठिस्सति	पठिस्सन्ति
मज्झिम पुरिस	पठिस्ससि	पठिस्सथ
उत्तम पुरिस	पठिस्सामि	पठिस्साम

अर्थ

पठिस्सति = पढ़ेगा।
पठिस्सन्ति = पढ़ेंगे।
पठिस्ससि = पढ़ोगे।
पठिस्सथ = पढ़ोगे।
पठिस्सामि = पढ़ूँगा।
पठिस्साम = पढ़ेंगे।

इसी प्रकार अन्य धातुओं के भी रूप अनागत काल में होंगे। यहाँ कुछ उदाहरण दिये जाते हैं —

धातु	अर्थ	पठम पुरिसमे प्रयोग
चर	विचरेगा	चरिस्सति
भू	होगा	भविस्सति
खनि	खोदेगा	खनिस्सति
खिप	फेंकेगा	खिपिस्सति
कर	करेगा	करिस्सति
कील	खेलेगा	कीलिस्सति
गम	जायेगा	गमिस्सति
,,		गच्छिस्सति

खनु	खोदेगा	खनिस्सति
गह्व	ग्रहण करेगा	गण्हिस्सति
खाद्	खायेगा	खादिस्सति
हिंस	हिंसा करेगा	हिंसिस्सति
सु	सुनेगा	सुणिस्सति
सि	सोयेगा	सयिस्सति
चल	चंचल होगा	चलिस्सति
चुण्ण	पीसेगा	चुण्णेस्सति
चुर	चुरायेगा	चोरेस्सति
छिदि	तोडेगा	छिन्दिस्सति
वस	रहेगा	वसिस्सति
लिख	लिखेगा	लिखिस्सति
भुज	भोजन करेगा	भुञ्जिस्सति
जल	जलेगा	जलिस्सति
जि	जीतेगा	जिनिस्सति
तच्छ	छीलेगा	तच्छिस्सति
तर	पार करेगा	तरिस्सति
दा	देगा	दस्सति
पुस	पालेगा	पोसेस्सति
पा	पीयेगा	पिविस्सति
दिस	देखेगा	पस्सिस्सति
पत	गिरेगा	पतिस्सति
दंस	डँसेगा	डसिस्सति

पूर्वकालिक क्रिया

धातु के पीछे त्वा, त्वान तथा तून प्रत्यय लगाकर पूर्वकालिक क्रिया वनाई जाती है, किन्तु 'त्वा' प्रत्यय का ही प्रयोग अधिक होता है। 'त्वान'

और 'तुन' प्रत्ययों के प्रयोग विरल होते है। 'त्वा' का अर्थ है 'कर' या 'करके'। पूर्वकालिक क्रिया के कुछ उदाहरण यहाँ दिये जाते है —

धातु	पूर्वकालिक क्रिया	अर्थ
कर	कत्वा	करके
सु	सुत्वा	सुनकर
दिस	पस्सित्वा	देखकर
पा	पिवित्वा	पीकर
सि	सयित्वा	सोकर
लज्ज	लज्जित्वा	लज्जा करके
रक्ख	रक्खित्वा	रक्षा करके
भुज	भुञ्जित्वा	भोजन करके
मर	मरित्वा	मर करके
युज	योजेत्वा	नियुक्त करके
दिस	दिस्वा	देखकर
पत	पतित्वा	गिरकर
पच	पचित्वा	पकाकर
डस	डसित्वा	डसकर
तर	तरित्वा	पारकर
ठा	ठत्वा	खड़ा होकर
जि	जेत्वा	जीतकर
रुदु	हन्दित्वा	हटाकर
कुट्ट	कोट्टेत्वा	कूटकर
कीळ	कीळित्वा	खेलकर
गम	गन्त्वा	जाकर
गह	गहेत्वा	लेकर
चल	चलित्वा	चंचल होकर
चिन्त	चिन्तेत्वा	सोचकर

छिदि	छिन्दित्वा	काटकर
जन	जनेत्वा	पैदाकर
जागर	जागरित्वा	जागकर

धातु के साथ समास होने पर, उसके पीछे 'त्वा' प्रत्यय का विकल्प से 'य' आदेश हो जाता है—

त्वा	य	अर्थ
अभिभवित्वा	अभिभूय	तिरस्कार करके
अभिवन्दित्वा	अभिवन्दिय	अभिवादन करके

उपसर्गपूर्वक धातु के पीछे आने वाले 'त्वा' प्रत्यय का 'य' आदेश हो जाता है —

उपसर्ग	धातु	रूप	अर्थ
आ	दा	आदाय	लेकर
प	हा	पहाय	छोडकर
वि	धा	विधाय	करके

धातु के साथ समास होने पर 'त्वा' का विकल्प से **तुं, यान, अच्च** तथा वान आदेश हो जाता है—

अभिहरित्वा, अभिहट्ठुं = लाकर
अनुमोदित्वा, अनुमोदियान = अनुमोदन करके
आहनित्वा, आहच्च = आघात करके
सक्करित्वा, सक्कच्च = सत्कार करके
अधिकरित्वा, अधिकिच्च = अधिकार करके
अधियित्वा, अधिच्च = पढकर
समेत्वा, समेच्च = मिलकर
पस्सित्वा, दिस्वान, दिस्वा = देखकर

कुछ और भिन्न पूर्वकालिक क्रिया

आगम्म = आकर
ओरुह्य = उतरकर
निक्खम्म = निकलकर
आरुह्य = चढ़कर
लद्धा = पाकर
लद्धान = पाकर
कातून = करके

अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद कीजिए —

१ दारका गेहे चरिस्सति । २ सो भूपालो भविस्सति । ३ ते रुक्खे व[illegible]स्सति । ४ उसभो नेन कम्पिस्सति । ५ अहं कम्मं न करिस्सामि । ६ त्वं अज्ज गेहं गमिस्ससि । ७ मनुस्सा उय्यानं कीलिस्सन्ति । ८. अम्मा उरगं व[illegible]स्सति । ९ नरा गामे कूपं खानिस्सन्ति । १० भरिया पुत्तं गण्हिस्सति । ११ गजो पण्णं भुञ्जिस्सति । १२ ते उच्छवो खादिस्सन्ति । १३ [illegible] सिग न [illegible]मिस्सति । १४ अहं धम्मं सुणिस्सामि । १५.

पीकर पुस्तक लिखेगा। १३. मैं राजा को जीतूँगा। १४. बटई पेड़ को छीलेगा। १५. ग्वाला (=गोपो) पहाड़ से भूमि पर गिरेगा। १६. साँप डँसकर मर जायेगा। १७. वह मुख को देखकर रोयेगा। १८. मैं पुत्र को पालूँगा। १९. धन को देखकर मन चञ्चल होगा। २०. वह पाप नहीं करेगा। २१. मैं बुद्ध की शरण जाऊँगा। २२. वह व्यापार (=वणिज्ज) करेगा। २३. भिक्षु शील की रक्षा कर ध्यान (=झान) करेगा। २४. वह निर्वाण (=निब्बान) पायेगा। २५. वह इस लोक को (=इम लोक) फिर नहीं आयेगा।

पन्द्रहवाँ पाठ

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (=गाय)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	धेनु	धेनू, धेनुयो
दुतिया	धेनुं	धेनू, धेनुयो
ततिया	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
चतुत्थी	धेनुया	धेनूनं
पञ्चमी	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
छट्ठी	धेनुया	धेनूनं
सत्तमी	धेनुयं, धेनुया	धेनूसु
आलपन	धेनु	धेनू, धेनुयो।

इन शब्दों के रूप भी 'धेनु' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
धातु	[illegible]	यागु	यवागु
कासु	[illegible]	दद्दु	दाद
कच्छु	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	सस्सु	[illegible]

उकारान्त 'मातु' शब्द के रूप 'धेनु' शब्द से भिन्न होते हैं:—

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	माता	मातरो
दुतिया	मातरं	मातरे, मातरो
ततिया	मातुया, मातरा	मातरेहि, मातरेभि, मातूहि, मातूभि
चतुत्थी	मातु, मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
पञ्चमी	मातुया, मातरा	मातरेहि, मातरेभि, मातूहि, मातूभि
छट्ठी	मातु, मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
सत्तमी	मातुया, मातरि	मातरेसु, मातुसु
आलपन	मात, माता	मातरो

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

१. धेनुया सद्धिं अहं गामं गमिस्सामि। २. वच्छतरो धेनुया खीरं पिवति। ३ धातुय काळवण्णो विज्जति। ४. आकासे विज्जु दिस्सति। ५. मातरं निच्चं पूजेति। ६. कासुय अजायो पतन्ति। ७. गद्रभा यागु पिवन्ति। ८. सुसाने मतमनुस्सं झापेन्ति। ९. सस्सु वन्धु ताळेति। १०. कणेरुया सद्धिं वनं गमिस्सति ११. सुवे भिक्खु रज्जु गण्हिस्सति। १२ कच्छु रुजति। १३. पदुमपुप्फानि वापिय कम्पन्ति। १४. दद्रोगो सुवे वड्ढिस्सति। १५. परसुवे अहं गण्डं (=फोड़े को) कण्डूयिस्सामि।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. गाय घास खाती है। २. उसे मीठे तृण अच्छे लगते हैं। ३. धातुओं में सोना उत्तम होता है। ४. गड्ढे मे कुत्ता गिर कर मरता है।

५ लड़की यवागु पकाती है। ६ कमल का फूल सफेद(= सेत) होता है। ७ स्त्री को लेकर वन में जाऊँगा। ८ जगल से आकर ब्राह्मण खाना खाता है। ९ हथिनी दौड़कर गगा मे जायेगी। १० खुजलाहट इस समय बढ़ती है। ११ दाद से खून(= रुधिर) निकल रहा है। १२ आकाश में बिजली चमक रही है। १३ सास बहू को सताती है (= पीलेति)। १४ वृद्ध माता का सत्कार करते हैं। १५ भिक्षु लोग गाय का दूध (= खीर) पीते हैं।

सोलहवाँ पाठ

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

पितु (=पिता)

सत्थु, पितु आदि कुछ उकारान्त शब्दों के रूप 'भिक्खु' शब्द के रूप से भिन्न होते हैं :—

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	पिता	पितरो
दुतिया	पितरं	पितरे, पितरो
ततिया	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
चतुत्थी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
पञ्चमी	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
छट्ठी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
सत्तमी	पितरि	पितरेसु, पितुसु, पितूसु
आलपन	पित, पिता	पितरो

सत्थु (=शास्ता, भगवान् बुद्ध)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सत्था	सत्थारो
दुतिया	सत्थारं	सत्थारे, सत्थारो
ततिया	सत्थारा	सत्थारेहि, सत्थारेभि, सत्थूहि, सत्थूभि
चतुत्थी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं
पञ्चमी	सत्थारा	सत्थारेहि, सत्थारेभि, सत्थूहि, सत्थूभि
छट्ठी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं

सत्तमी	सत्थरि	सत्थारेसु
आलपन	सत्थ, सत्था	सत्थारो

इन शब्दों के रूप 'सत्थु' शब्द के समान होंगे.—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कत्तु	कर्त्ता	नत्तु	नाती
गन्तु	जाने वाला	नेतु	नेता
जेतु	जीतने वाला	भत्तु	रक्षा करने वाला
ञातु	ज्ञाता	विञ्ञापेता	सूचित करने वाला
विनेतु	विनय सिखानेवाला	सोतु	सुनने वाला
वत्तु	वक्ता	महामन्धातु	एक राजा का नाम

क्रिया

अतीतकाल, परिसमाप्त्यर्थक भूत

'पठ' धातु

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	अपठी, पठी	अपठिंसु, पठिंसु
	अपठि, पठि	अपठु, पठु
मज्झिम पुरिस	अपठो, पठो	अपठित्थ, पठित्थ
उत्तम पुरिस	अपठिं, पठिं	अपठिम्ह, पठिम्ह, अपठिम्हा, पठिम्हा

सभी धातुओं के रूप परिसमाप्त्यर्थक अतीतकाल में उक्त प्रकार से ही होंगे। यहाँ कुछ उदाहरण दिए जाते हैं :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस एकवचन में प्रयोग
गम	गया	अगमासि
भू	हुआ	अभवी
चुर	चुराया	अचोरयि
टा	खड़ा रहा	अट्ठासि
वस	रहा	वसि
रुदि	रोया	रोदि
लभ	पाया	लभि
दा	दिया	अदासि
वद	कहा	अवदि
हु	हुआ	अहोसि
उ + पद	उत्पन्न हुआ	उप्पज्जि
अव + लोक	देखा	ओलोकेसि
कर	किया	अकरि
नि + वतु	रुका	निवत्ति
प + विस	गया	पाविसि

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१ पिता पोत्थकं अपठि। २. सत्था गामं भिक्खाय अगमासि। ३ सत्थरि परिनिब्बुते सक्को गाथं अभासि। ४. कत्ता कम्मं अकरि। ५. दारका गामेसु विचरिंसु। ६. जेता धनं आदाय नगरं अगमि। ७. वत्ता धम्मं देसेत्वा गामं अगमासि। ८. सोतारो कदापि धम्मं न सुणिंसु। ९. दारको विहारं गन्त्वा निवत्ति। १०. भिक्खु भिक्खं गहेत्वा वनं पाविसि। ११. सत्था भिक्खाय गामे चरित्वा भिक्खु ओलोकेसि। १२.

सो पापकम्म अकरि । १३ सा इत्थी मग्गे अट्ठासि । १४ अहं वन गन्त्वा वसि । १५ भूपाला जनेहि धन लभिंसु ।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१ शास्ता ने एक भिक्षु को देखा । २ कुत्ता भात खाया । ३ लड़कों ने पुस्तकें पढ़ीं । ४ तुम लोगों ने सूरज को देखा । ५ पिता पुत्र को देखकर मार्ग में खड़ा हुआ । ६ कुत्ता घर में था (= अहोसि) । ७. मणि को लड़के ने चुराया । ८ स्त्री ने पति को मार कर रोया । ९. उसने एक पुत्ररत्न (= पुत्तरतन) पाया । १० नारदो देवल एव अवदि । ११ त्वं पठमं सालं अगमासि । १२ वाणिजस्स गेहे दारिका उप्पज्जि । १३ गो अरञ्ञं गन्त्वा तत्थेव वसि । १४ अज्ज अहं इधेव अहोसि । १५ मयं तिपिटकं पठिम्ह ।

सत्रहवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

'अम्ह' (=मैं)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अहं	मयं, अस्मा, अम्हे, नो
दुतिया	मं, ममं	अम्हं, अम्हाकं, अम्हे, नो
ततिया	मया, मे	अम्हेहि, अम्हेभि, नो
चतुत्थी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अस्माकं, अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
पञ्चमी	मया	अम्हेहि, अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अस्माकं, अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
सत्तमी	मयि	अस्मासु, अम्हेसु

तुम्ह (=तू)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	त्वं, तुवं	तुम्हे, वो
दुतिया	तं, तवं, तुवं, त्वं	तुम्हं, तुम्हाकं, तुम्हे, वो
ततिया	त्वया, तया, ते	तुम्हेहि, तुम्हेभि, वो
चतुत्थी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
पञ्चमी	त्वया, तया, त्वम्हा	तुम्हेहि, तुम्हेभि
छट्ठी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
सत्तमी	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

'अम्ह' तथा 'तुम्ह' सर्वनाम के रूप तीनों लिगों में समान होते हैं। सर्वनाम में आलपन नहीं होता है।

क्रिया

अनुज्ञा

प्रश्न, प्रार्थना, अनुरोध, निमन्त्रण, आज्ञा, जिज्ञासा आदि के अर्थ में अनुज्ञा होती है। इसके रूप नीचे लिखे प्रकार से होते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
पढम पुरिस	पढतु	पढन्तु
मज्झिम पुरिस	पढ, पढाहि	पढथ
उत्तम पुरिस	पढामि	पढाम

अर्थ

पढम पुरिस	पढे	पढें
मज्झिम पुरिस	पढ	पढो
उत्तम पुरिस	पढूँ	पढें

अनुज्ञा के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

धातु	अर्थ	पढम पुरिस एकवचन में प्रयोग
कर	करे	करोतु
इच्छ	इच्छा करे	इच्छतु
कुप	[illegible]	कुप्पतु
हिंस	हिंसा करे	हिंसतु
सि	सोवे	सयतु
लभ	पावे	लभतु
रक्ख	रक्षा करे	रक्खतु
दिस्स	देखे	पस्सतु
पत	गिरे	पततु
नच्च	नाचे	नच्चतु
गम	[illegible]	गच्छतु
गा	[illegible]	गायतु

छिदि	काटे	छिन्दतु
जीव	जीये	जीवतु
तर	पार करे	तरतु
ठा	खड़ा रहे	तिट्ठतु
दा	दे	ददातु
नम	नमस्कार करे	नमतु
दिस	उपदेश दे	देसेतु

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. अहं गेहं गच्छामि। २. त्वं विज्जालयं गच्छ। ३. अम्हाकं धीतरो पोत्थकं पठन्तु। ४. वाणिजो वणिज्जं कत्वा नगरं गच्छतु। ५. त्वयि गते कुमारो गेहं अगमासि। ६. भूपालो राजिणिं रक्खतु। ७ सो आकासे सुरियं पस्सतु। ८. अम्हाकं पिता धनं ददातु। ९. सत्था जनस्स धम्मं देसेतु। १० चोरा गामं मा विलोपेन्तु। ११. दारका मग्गे तिट्ठन्तु। १२. सो सतं सवच्छरं जीवतु। १३. त्वं पब्बतम्हा मा पताहि। १४. दारको याव सुरियुग्गमना सयतु। १५. ते पठविया धनं लभन्तु।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. मेरे पास (=सन्तिके) खड़ा हो। २. वह मत रोये। ३. लड़का स्कूल जाये। ४. भगवान् (=भगवा) धर्म का उपदेश दें। ५ कुसीनारा में एक राजा रहता था। ६. वह राजा यहाँ रुके। ७. तेरी स्त्री कब मरी? ८. हम नगर जाँये। ९. अब आदमी बाजार (=आपण) जाँवें। १०. कुत्ता नदी को पार करे। ११. दास घर में भात पकाये। १२. तू और महानाम यहाँ (=इधेव) बैठ कर खाओ। १३. कब पिता तुम्हारे लिए घोड़ा लेगा? १४. मैं नहीं रुकूँगा। १५. वही यहाँ रुके।

अठारहवाँ पाठ

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

सब्बञ्ञु (= सर्वज्ञ)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सब्बञ्ञू	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो
दुतिया	सब्बञ्ञुं	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो
ततिया	सब्बञ्ञुना	सब्बञ्ञूहि, सब्बञ्ञूभि
चतुत्थी	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञूनं
पञ्चमी	सब्बञ्ञुना, सब्बञ्ञुस्मा, सब्बञ्ञुम्हा	सब्बञ्ञूहि, सब्बञ्ञूभि
छट्ठी	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञूनं
सत्तमी	सब्बञ्ञुम्हि, सब्बञ्ञुस्मिं	सब्बञ्ञूसु
आलपन	सब्बञ्ञु	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो

इन शब्दों के रूप भी 'सब्बञ्ञु' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
मग्गञ्ञु	मार्गज्ञ	धम्मञ्ञु	धर्मज्ञ
अत्थञ्ञु	अर्थज्ञ	कालञ्ञु	कालज्ञ
रत्तञ्ञु	पुराना परिचित	मत्तञ्ञु	मात्रज्ञ
कतञ्ञु	कृतज्ञ	तत्तञ्ञु	तत्त्वज्ञ
विदू	जानने वाला	वेदगू	[illegible]
पारगू	पार जाने वाला		

कृदन्त

[illegible] प्रत्यय लगाए जाते हैं। इनके

[illegible] के लिए देखिये [illegible] पाठ। (कृदन्त [illegible] के लिए [illegible])।

लगाने से जो रूप बनता है, वह कर्ता के विशेषण के समान व्यवहृत होता है। उसके रूप पुल्लिग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुसकलिग में 'फल' शब्द के समान और स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं।

धातु	कृदन्त पुल्लिङ्ग	अर्थ
दिस	दिट्ठो	देखा हुआ
गम	गतो	गया हुआ
कुध	कुद्धो	क्रुद्ध हुआ
सुस	सुक्खो	सूखा हुआ
भी	भीतो	डरा हुआ
पा	पीतो	पिया हुआ
तर	तिण्णो	पार किया हुआ
सिध	सिद्धो	सिद्ध हुआ
खम	खन्तो	क्षमा किया हुआ
गुह	गूल्हो	छिपा हुआ
जन	जातो	उत्पन्न हुआ
जर	जिण्णो	जीर्ण हुआ
ठा	ठितो	खडा हुआ
तुस	तुट्ठो	सन्तुष्ट हुआ
दम	दन्तो	दमन किया हुआ
भुज	भुत्तो	खाया हुआ
सं + पूर	सम्पुण्णो	भरा हुआ
वस	वुत्थो, वुसितो	रहा हुआ
रञ्ज	रत्तो	अनुरक्त हुआ
वड्ढ	वुद्धो	बढा हुआ
भू	भूतो	हो चुका हुआ
पुच्छ	पुट्ठो	पूछा हुआ
दह	दड्ढो	जला हुआ

मुह्	मुद्धो	भूला हुआ
भञ्ज	भग्गो	टूटा हुआ
पच	पक्को	पका हुआ
मुच	मुक्को	छूटा हुआ
तस	त्रस्तो	डरा हुआ

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

उन्नीसवाँ पाठ

ऊकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सयम्भू (= स्वयम्भू)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि
दुतिया	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि
आलपन	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि

शेष रूप 'सब्बञ्ञू' शब्द के ही समान होंगे।

क्रिया

विधि लिंग (= हेतुफल)

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	पठे, पठेय्य	पठेय्युं, पठुं
मज्झिम पुरिस	पठे, पठेय्यासि	पठेय्याथ
उत्तम पुरिस	पठे, पठेय्यामि	पठेमु, पठेय्याम, पठेय्यामु

हेतु तथा फल के अर्थ मे धातुओं के रूप इस प्रकार होते हैं। जैसे—यदि संस्कार नित्य हों, तो निरुद्ध न हों (सचे सखारा निच्चा भवेय्यु, न निरुज्झेय्यु)। यहाँ नित्य होना हेतु है और न निरुद्ध होना फल।

कृदन्त[1] के कुछ और उदाहरण

धातु	कृदन्त	अर्थ
लभ	लद्धो	पाया गया

---

१. परिभाषा और विस्तार के लिए देखिये—तैंतीसवाँ पाठ। (कृदन्त शब्दों के लिए अठारहवाँ पाठ भी देखिये)।

रक्ख	रक्खितो	रक्षा किया गया
भिद	भिन्नो	फोड़ा गया
भज्ज	भट्ठो	भूना गया
बध	बद्धो	बाँधा गया
अनु + सास	अनुसिट्ठो	अनुशासन किया गया
अभि + भू	अभिभूतो	हराया गया
आ + मस	आमट्ठो	छुआ गया
इसु	इट्ठो	चाहा गया
दस	दट्ठो	डँसा गया
ञा	ञातो	जाना गया
छिदि	छिन्नो	तोड़ा गया
जि	जितो	जीता गया
फुस	फुट्ठो	स्पर्श किया गया
प+सस	पसत्थो	प्रशंसा किया गया
परि + बु	परिबुतो	घेरा गया
नस	नासितो	नष्ट किया गया
नि + वस	निवत्थो	पहना गया

धम्म करेय्याम। ११. गिलानो पुरिसो रोगेन अभिभूतो दुक्ख सयति। १२. दासो भूपालेन दण्डितो। १३. इत्थिया अग्गिना सासपो भट्ठो। १४. वद्धो गोणो गेहे येव मतो। १५. सचे त्वं नगरं गच्छेय्यासि, बहु भत्तवेतनं लभेय्यासि।

पालि में अनुवाद कीजिये

१. टूटा हुआ घडा नष्ट हो गया। २. यदि मैं वाराणसी न जाता, तो बीमार न होता। ३. राजा ने रानी से प्रश्न पूछा। ४. धनी निर्धन न होते, यदि काम करके धन कमाते। ५. दास द्वारा अनुशासित बैल मर गया। ६. स्त्री द्वारा मोह जीता गया। ७ प्रशंसित लडका स्कूल गया। ८ मैं घर जाता, यदि थोडा धन मिल जाता। ९. पहना हुआ वस्त्र पानी से भींग गया (=तेमित)। १० उस विद्वान् द्वारा धर्म जाना गया। ११. मैं क्रोध से अभिभूत होकर भी प्रसन्न हूँ। १२ व्यापारी का रक्षित धन नष्ट हो गया। १३. आग से दास का घर स्पर्श किया गया। १४. तू यदि विहार जाता, तो धर्म सुनता। १५. वे लोग दान देते, यदि धन कमाते।

बीसवाँ पाठ

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वधू (= बहू)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	वधू	वधू, वधुयो
दुतिया	वधुं	वधू, वधुयो
ततिया	वधुया	वधूहि, वधूभि
चतुत्थी	वधुया	वधूनं
पञ्चमी	वधुया	वधूहि, वधूभि
छट्ठी	वधुया	वधूनं
सत्तमी	वधुयं, वधुया	वधूसु
आलपन	वधु	वधू, वधुयो

इस प्रकार के ऊकारान्त शब्द वधू शब्द के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जम्बू	जामुन	सरभू	एक नदी का नाम
सुतनू	सुन्दरी	चमू	सेना
वामोरू	स्त्री	सरबू	छिपकली

कुछ और 'निपात'[1] शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अन्तरा	[illegible]	अञ्ञथा	[illegible]
अन्तरेन	[illegible]	अतीव	[illegible]

1 निपात [illegible] के लिए देखिये, [illegible]।

अत्थं	अस्त, विनाश	अधो	नीचे
अन्तरा	मध्य मे	अन्तो	मध्य में
अप्पेव	शायद	अभिण्हं	बार-बार
अमुत्र	वहाँ	अवस्सं	अवश्य
आरका	दूर	आरा	दूर
आवि	प्रगट	उच्चं	ऊँचा
किञ्चि	कुछ	कीव	कब तक
कुदाचनं	कभी	क्व	कहाँ
चिरं	दीर्घकाल	चिरस्सं	चिरकाल
जातु	निश्चय से	तं	उस हेतु से
ततो	उस हेतु से	तथरिव	वैसे
तर्हि	वहाँ	ताव	तब तक
तिरियं	तिरछा	तिरो	छिपा हुआ
तुण्ही	चुप	तेन	उस हेतु से
दिवा	दिन में	धुवं	स्थिर, निश्चय से
नमो	नमस्कार	नहि	नहीं
नाना	भिन्न	नु	शायद
नून	निश्चय से	नो	नहीं
पगे	प्रातःकाल	पतिरूपं	ठीक
परितो	चारों ओर	पातु	प्रकट
पुनप्पुनं	बार-बार	पुरतो	सामने
पुरे	सामने	पेच्च	परलोक में
बाहिरं	बाहर	मिच्छा	झूठ
मुधा	बेकार	मुसा	झूठ
मुहु	बार-बार	यं	जिस कारण से
यतो	जिस हेतु से	यथरिव	जैसे
येन	जिस हेतु से	यावता	जब तक

रहो	गुप्त	विना	बिना
		समन्त	चारों ओर
सम्मा	अच्छी तरह	सुट्ठु	अच्छी तरह
उदाहु	अथवा	उद	अथवा
किमु	क्या	सचे	यदि

ये निपात शब्द विस्मयादिद्योतक हैं—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अह	हे	अत्थु	ऐसा हो
एव	हाँ	अद्धा	निश्चय से
अम्मो	हे	अरे	अरे
अहो	आश्चर्य है	जे	रे (स्त्रियों के लिए)
हम्भो	हे	भो	हे
रे	रे	वे	निश्चय से
साधु	अच्छा	धि	धिक्कार
हन्द	प्रेरणा द्योतक	हा	शोक द्योतक
हि	निश्चय से	हे	हे

इन निपातों का अपना कोई अर्थ नहीं है। ये वाक्य की सुन्दरता बढ़ाने में सहायक होते हैं —

अत्थु, खो, चे, एव, यग्घे, सुद, किर।

१२. सचे त्व गेह गच्छेय्यासि, एकं मणिं लभेय्यासि । १३. हम्भो ! सग्गं गच्छाहि । १४. अहं तं चिरस्स जानामि । १५. वधुया सीस दिवा न दहति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. वहू बार-बार घर जाती है । २. ब्राह्मण कभी-कभी ही बाजार जाता है । ३. मैं एक बार वाराणसी गया था । ४. वहाँ एक विद्वान् भिखारी रहता था । ५. गंगा के किनारे एक गाँव मे विहार है । ६. विहार में एक सुन्दर स्तूप भी है । ७ उस विहार में बहुत से भिक्षु रहते हैं । ८. एक धार्मिक उपासक वहाँ दान देने आता है । ९ उसकी स्त्री भी धार्मिक है । १० लड़का नित्य धर्म-श्रवण करता है । ११. घर में स्त्री ठीक से रहती है । १२. घर के पास एक कूँआ है । १३. कुँए का जल मीठा और शीतल है । १४. लोग वहाँ आकार पानी पीते हैं । १५. देवता भी रात में वहाँ आया करते हैं ।

इक्कीसवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

'त' (= वह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सो, स्यो	ते, ने
दुतिया	तं, नं	ते, ने
ततिया	तेन, नेन	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
चतुत्थी	तस्स, नस्स, अस्स	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
पञ्चमी	तम्हा, अम्हा, नम्हा, तस्मा	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
छट्ठी	तस्स, नस्स, अस्स	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
सत्तमी	तम्हि, अम्हि, नम्हि, तस्मिं, नस्मिं, अस्मिं	तेसु, नेसु

ततिया	ताय, नाय, तस्सा, तिस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
चतुत्थी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय, तिस्सा, तस्सा, ताय	तासं, आसं, तासानं
पञ्चमी	ताय, नाय, तस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
छट्ठी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय, तिस्सा, तस्सा, अस्सा, ताय	तासं, आसं, तासानं
सत्तमी	तिस्सं, तस्सं, अस्सं, तायं, तस्सा, तिस्सा	तासु

निमित्तार्थक अव्यय

'इस काम के निमित्त' अर्थ में धातु से परे तुं, ताये और तवे प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कातुं गच्छति, कत्ताये गच्छति, कातवे गच्छति = करने के लिए जाता है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पठितुं	पढने के लिए	पचितुं	पकाने के लिए
भोत्तुं	भोजन करने के लिए	सोतुं	सुनने के लिए
दट्ठुं	देखने के लिए	युज्झितुं	युद्ध करने के लिए
वत्तुं	बोलने के लिए	कत्तुं	करने के लिए
रुन्धितुं	रूँधने के लिए	दातुं	देने के लिए
पिवितुं	पीने के लिए	पातुं	पीने के लिए
गन्तुं	जाने के लिए	हरितुं	ले जाने के लिए
आहरितुं	लाने के लिए	कातुं	करने के लिए
लद्धुं	पाने के लिए	लभितुं	पाने के लिए
भुञ्जितुं	खाने के लिए	भवितुं	होने के लिए

अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद कीजिए—

१ सो नहायितु नदिं गच्छति। २ तेहि गोणो नीतो। ३ त गेह अग्गिना आमट्ठ। ४ तस्स भरिया गिलाना अत्थि। ५. ताय पुत्तो वणिज्ज करोति। ६ दारको भोत्तु महानस (= भोजनशाला) गच्छति। ७ गेत्त रुन्धितु गच्छ आनेहि। ८ अजाय खीर पातु याचको इच्छति। ९ भिक्खु तथागत दट्ठु विहारे एव वसति। १० अह तिपिटक पठितु आचरियस्स सन्तिक गच्छामि। ११ ते सायुम्पेन पोत्थकानि उग्गण्हन्ति। १२. धम्म सोतु अम्हे गच्छाम। १३. मम भरिया युज्झितु युद्धभूमि गच्छति। १४ कदा सा वनिता सस्सुया गेह अगमासि? १५ सो अत्तनो आहार पचितु तण्डुल याचति।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१ वह स्त्री विहार देखने के लिए जाती है। २. राजा गाँव को देखने के लिए जा रहा है। ३ दास चावल लाने के लिए शहर गया था। ४ उसकी माता बीमार हो गई है। ५ मै शहर जाना चाहता हूँ। ६ भिक्षु तथागत की वन्दना करने के लिए विहार जाना चाहता है। ७ चोर धन लेने के लिए रात मे घूमते है। ८ व्यापारी धन पाने के लिए व्यापार करते है। ९ कुत्ता पानी के लिए नदी को जाता है। १० उस [illegible] से एक वस्त्र गिर गया। ११ मेरे पिता नहाने के लिए बच्चे के साथ गए। १२ स्थविर (=वे) बोधि की वन्दना करने के लिए वहाँ गये। १३ [illegible] है। १४ तुम काम करने के लिए कहाँ जा रहे हो? १५ उस घर का [illegible] चला गया।

बाइसवाँ पाठ

ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

गो (=बैल)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गो	गावो, गवो
दुतिया	गावुं, गावं, गवं	गावो, गवो,
ततिया	गावेन, गवेन, गावा, गवा	गोहि, गोभि
चतुत्थी	गावस्स, गवस्स, गवं	गवं, गुन्नं, गोनं
पञ्चमी	गवा, गावा, गावस्मा, गावम्हा, गवस्मा, गवम्हा	गोहि, गोभि
छट्ठी	गावस्स, गवस्स, गवं	गवं, गुन्नं, गोनं
सत्तमी	गावे, गवे, गावम्हि, गवम्हि, गावस्मिं, गवस्मिं	गावेसु, गवेसु, गोसु
आलपन	गो	गावो, गवो

'गो' के अतिरिक्त पालि में ओकारान्त पुल्लिग शब्द अन्य नहीं मिल्ते। 'गो' शब्द के रूप स्त्रीलिंग में भी पुल्लिङ्ग के समान ही होते हैं।

ओकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

चित्तगो (=विचित्र गौवोंवाला)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि
दुतिया	चित्तगुं	चित्तगू, चित्तगूनि
आलपन	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि

शेष रूप 'आयु' शब्द के समान होंगे।

'गो' शब्द के स्थान मे सभी विभक्तियो मे विकल्प से **'गोण'** आदेश हो जाता है और उसके रूप पुल्लिङ्ग अकारान्त 'बुद्ध' शब्द के समान होते हैं।

प्रेरणार्थक क्रिया

प्रेरणा करने के अर्थ मे प्रेरणार्थक क्रिया होती है। जब कोई कर्त्ता किसी दूसरे से काम कराता है, तो वह प्रेरणार्थक क्रिया कही जाती है। प्रेरणार्थक क्रिया के रूप इस प्रकार होते हैं —

धातु	प्रेरणार्थक रूप	अर्थ
कर	कारेति, कारयति, कारापेति, कारापयति	कराता है
पच	पाचेति, पाचयति, पाचापेति, पाचापयति	पकवाता है
कन्द	कन्देति, कन्दयति, कन्दापेति, कन्दापयति	रुलाता है
कम्प	कम्पेति, कम्पयति, कम्पापेति, कम्पापयति	कँपाता है
चज	चाजेति, चाजयति, चाजापेति, चाजापयति	छोड़वाता है
भुज	भोजेति, भोजयति, भोजापेति, भोजापयति	खिलवाता है
कुध	कोधेति, कोधयति, कोधापेति, कोधापयति	क्रोध करवाता है
खिप	खेपेति, खेपयति, खेपापेति, खेपापयति	फेंकवाता है
लिख	लेखेति, लेखयति, लेखापेति, लेखापयति	लिखवाता है

लेखापितं । १३ सा इत्थी गाम गन्त्वा एक विहार कारापेसि । १४. अह कदापि ब्राह्मणे न भोजापेमि । १५. कपणमनुस्सो धनिकेहि पलापयति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. बैल गड्ढे में गिराया जाता है । २. हाथी को केला खिलाया जाता है । ३. गाँव में एक बढई द्वारा रथ बनाया जाता है । ४. स्थविर (= थेरो) गाँव से विहार में ले जाये जाते हैं । ५. अशोक द्वारा अनेक स्तूप बनवाये गए । ६. वह आदमी चोरों द्वारा मारा गया । ७. लड़के से एक पत्र लिखवाते हैं । ८. आज पानी बरसाऊँगा । ९. तुमको घर लिवा चलूँगा । १०. उससे भिक्षुओं को दान दिलवाऊँगा । ११. वह बच्चे को खिलवाता है । १२. बैल घर को कँपाता है । १३. रात मे वह खेत में काम करवाता है । १४. तुम तथागत की वन्दना करवाओ । १५. अनाथपिण्डिक द्वारा जेतवन महाविहार बनवाया गया ।

तेइसवाँ पाठ

कुछ अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द

नीचे कुछ ऐसे शब्दों के रूप दिए जाते हैं, जो अकारान्त तथा आकारान्त होते हुए भी 'बुद्ध' आदि शब्दों से भिन्न रूपवाले होते हैं—

राज (=राजा)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	राजा	राजा, राजानो
दुतिया	राजानं, राजं	राजानो
ततिया	रञ्ञा, राजेन, राजिना	राजेहि, राजूहि, राजेभि, राजूभि
चतुत्थी	रञ्ञो, रञ्ञस्स, राजिनो, राजस्स	रञ्ञं, राजूनं, राजानं
पञ्चमी	रञ्ञा, राजम्हा, राजस्मा	राजेहि, राजेभि, राजूहि,

ततिया	अत्तेन, अत्तना	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि
चतुत्थी	अत्तनो, अत्तस्स	अत्तानं
पञ्चमी	अत्तना, अत्तस्मा, अत्तम्हा	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि
छट्ठी	अत्तनो, अत्तस्स	अत्तानं
सत्तमी	अत्तनि, अत्तस्मिं, अत्तम्हि, अत्ते	अत्तनेसु, अत्तेसु
आलपन	अत्त, अत्ता	अत्ता, अत्तानो

ब्रह्म (=ब्रह्मा)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	ब्रह्मा	ब्रह्मा, ब्रह्मानो
दुतिया	ब्रह्मानं, ब्रह्मं	ब्रह्मानो
ततिया	ब्रह्मना, ब्रह्मुना	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्मूहि, ब्रह्मूभि
चतुत्थी	ब्रह्मुनो, ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मूनं
पञ्चमी	ब्रह्मना, ब्रह्मुना	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्मूहि, ब्रह्मूभि
छट्ठी	ब्रह्मुनो, ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मूनं
सत्तमी	ब्रह्मे, ब्रह्मनि, ब्रह्मस्मिं, ब्रह्मम्हि	ब्रह्मेसु
आलपन	ब्रह्मे	ब्रह्मा ब्रह्मानो,

पुम (=मनुष्य)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	पुमा, पुमो,	पुमो, पुमानो,
दुतिया	पुमानं, पुमं,	पुमानो, पुमाने, पुमे,

ततिया	पुमाना, पुमुना, पुमेन	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि
चतुत्थी	पुमुनो, पुमस्स	पुमानं
पञ्चमी	पुमाना, पुमुना, पुमा, पुमस्मा, पुमम्हा,	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि,
छट्ठी	पुमुनो, पुमस्स	पुमानं,
सत्तमी	पुमाने, पुमे, पुमस्मि, पुमम्हि,	पुमासु, पुमानेसु, पुमेसु
आलपन	पुमं, पुम	पुमानो, पुमा

युव (= युवक)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	युवा,	युवा, युवानो, युवाना
दुतिया	युवानं, युवं	युवाने, युवे
ततिया	युवाना, युवानेन युवेन	युवानेहि, युवानेभि, युवेहि, युवेभि
चतुत्थी	युवानस्स, युवस्स युविनो	युवानानं युवानं
पञ्चमी	युवाना, युवानस्मा युवानम्हा	युवानेहि, युवानेभि युवेहि, युवेभि.

सा (= कुत्ता)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सा	सा, सानो
दुतिया	सं, सानं	से, साने
ततिया	सेन, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
चतुत्थी	सस्स, साय, सानस्स,	सानं
पञ्चमी	सा, सस्मा, सम्हा, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
छट्ठी	सस्स, सानस्स	सानं
सत्तमी	से, सस्मि, सम्हि, साने	सासु
आलपन	स, सान	सा, सानो

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. रञ्ञा तस्मिं गामे एको भिक्खूनं आवासो कारापितो। २. राजिनि पसन्नम्हि भटो धनवा जातो। ३. राजून कम्म पसत्थ न होति। ४. अत्तनो चित्तं निग्गण्हाहि। ५. अत्तना पापकम्म न कातब्ब। ६. ब्रह्मानो आकासे तिट्ठन्ति। ७. ब्रह्मुनो नत्ता काल कतो। ८. पुमानो गामेसु आहिण्डन्ति। ९. तस्मिं पुमे दारको निसिन्नो होति। १०. इदानि युवान कालो आगतो। ११. मघवा सग्गे पमोदति। १२ अज्ज गेहा साने पलापेहि। १३. सुवपोतको आकासे उड्डेति। १४. राजानो यदा कदा धम्मिका होन्ति। १५. मय पुमान धम्म देसेम।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१. राजा देवी के साथ राजभवन में है। २. राजाओं द्वारा एक विहार बनवाया गया। ३. गाँव में अपने लिए मैंने घर बनवाया है।

४ मैं राजा को कर (=शुल्क) देता हूँ। ५. ब्रह्मा लोगों को उपदेश देते हैं। ६ मनुष्य घर से बाहर जाता है। ७ उस आदमी पर राजा अत्यधिक प्रसन्न है। ८ युवक बैठकर पुस्तक लिखता है। ९ युवक के साथ एक तरुणी स्त्री भी बैठी है। १० कुत्ते इधर उधर (=इतो चिता) घूमते हैं। ११ कुत्तों को लोग पोसते हैं। १२ वह भोजन करके अपने साथी को भी (=सहायकमपि) बुलाता है। १३ तुम अपने स्थान से कहाँ जाते हो? १४ आम का पेड़ भूमि पर गिर गया। १५ हाथी कुत्ता से कभी भी नहीं डरता है।

चौबीसवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

सब्ब (=सब)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सब्बो	सब्बे
दुतिया	सब्बं	सब्बे
ततिया	सब्बेन	सब्बेहि, सब्बेभि
चतुत्थी	सब्बस्स	सब्बेसानं
पञ्चमी	सब्बम्हा, सब्बस्मा	सब्बेहि, सब्बेभि
छट्ठी	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
सत्तमी	सब्बम्हि, सब्बस्मिं	सब्बेसु
आलपन	सब्ब, सब्बा	सब्बे

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सब्बं	सब्बानि
दुतिया	सब्बं	सब्बे, सब्बानि
आलपन	सब्ब, सब्बा	सब्बानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सब्बा	सब्बा, सब्बायो
दुतिया	सब्बं,	,, ,,

ततिया	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि
चतुत्थी	सब्बस्सा, सब्बाय	सब्बासं, सब्बासानं
पञ्चमी	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि
छट्ठी	सब्बस्सा, सब्बाय	सब्बास, सब्बासान
सत्तमी	सब्बस्सं, सब्बाय	सब्बासु
आलपन	सब्बे	सब्बा, सब्बायो

इन शब्दों के रूप भी सब्ब शब्द के ही समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कतर	कौन	कतम	कौन-सा
अञ्ञ	अन्य	इतर	दूसरा
अञ्ञतम	कोई	अञ्ञतर	कोई

पुब्ब, पर, अपर, दक्खिण, उत्तर तथा अधर शब्दों के रूप भी सब्ब के समान ही होंगे, केवल पञ्चमी बहुवचन में इनके दो रूप होंगे। यथा

पुब्बे, पुब्बा। परे, परा। अपरे, अपरा। दक्खिणे, दक्खिणा। उत्तरे, उत्तरा। अधरे अधरा।

किं (=कौन)

सभी विभक्तियों में किं शब्द का 'क' आदेश हो जाता है।

सत्तमी	कम्हि, किम्हि, कस्मिं, किस्मिं	केसु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	किं, कं	के, कानि
दुतिया	किं, कं	के, कानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	का	का, कायो
दुतिया	कं	का, कायो
ततिया	काय	काहि, काभि
चतुत्थी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
पञ्चमी	काय	काहि, काभि
छट्ठी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
सत्तमी	कस्सं, कायं	कासु

'य' (= जो) शब्द के रूप तीनों लिंगों में 'किं' के समान ही होंगे।

पुल्लिङ्ग में—यो, ये। य, ये। येन, येहि, येभि। यस्स, येस, येसानं। यम्हा, यस्मा, येहि, येभि। यस्स, येस, येसान। यम्हि, यस्मि, येसु।

नपुंसकलिङ्ग में—य, ये, यानि। य, ये, यानि। शेष रूप पुल्लिन्ग के समान ही होंगे।

स्त्रीलिङ्ग मे—या, या, यायो। य, या, यायो। याय, याहि याभि। यस्सा, याय, यास, यासानं। याय, याहि, याभि। यस्सा, याय, यास, यासान। यस्सं, याय, यासु।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१ सब्बे जना वुद्ध मरणं गच्छन्ति । २ सब्बा इत्थियो पुत्ते पोसेन्ति । ३ सब्बासु दिसासु अपरिहतो एव भमति । ४ सब्बं धनं छड्डेत्वा परलोकं गन्तुं भविस्सति । ५ अञ्ञतरो पुग्गलो आगतो । ६ अज्ज कतमी तिथि होति ? ७ कतमं दारकं सिक्खापेमि ? ८ अञ्ञं गोणं रथे योजेहि । ९ का अञ्ञा, कदा नु भविस्सति । १० यो पुरिसो ततो आगतो, सो एव ताय भरियाय सद्धिं भुञ्जति । ११ इतरो गेहे निसीदित्वा पोत्थकं लिखति । १२ सुनखा धावित्वा सब्बेसु गेहेसु भत्तं भुञ्जति । १३ सब्बायो गावीनं नीरं ददन्ति । १४ का आकासमग्गेन सह करोन्ता गच्छति ? १५ पठविया सब्बो जनो सयति ।

पालि में अनुवाद कीजिए —

पच्चीसवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

एत (=यह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एसो	एते
दुतिया	एतं, एनं	एते, एने
ततिया	एतेन	एतेहि, एतेभि
चतुत्थी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
पञ्चमी	एतम्हा, एतस्मा	एतेहि, एतेभि
छट्ठी	एतस्स	एतेस, एतेसानं
सत्तमी	एतम्हि, एतस्मिं	एतेसु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एतं	एते, एतानि
दुतिया	एतं	एते, एतानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एसा	एता, एतायो
दुतिया	एतं	एता, एतायो
ततिया	एताय	एताहि, एताभि

चतुर्थी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
पञ्चमी	एताय	एताहि, एताभि
छट्ठी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
सत्तमी	एतिस्सं, एतस्सं, एतासं	एतासु

इम (=यह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अयं	इमे
दुतिया	इमं	इमे
ततिया	अनेन, इमिना	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
चतुर्थी	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
पञ्चमी	अस्मा, इमस्मा, इमम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
छट्ठी	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
सत्तमी	अस्मिं, इमम्हि, इमस्मिं	एसु, इमेसु

नपुंसकलिङ्ग

एकवचन	बहुवचन
इदं, इमं	इमे, इमानि
इदं, इमं	इमे, इमानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे ।

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
अयं	इमा, इमायो
इमं	इमा, इमायो
इमाय	इमाहि, इमाभि
इमिस्साय, इमिस्सा	इमासं, इमासानं
इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	

पञ्चमी	इमाय	इमाहि, इमाभि,
छट्ठी	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं इमासानं
सत्तमी	अस्सं, इमिस्सं, इमायं	इमासु

अमु (=वह)

पुल्लिग

	एकवचन	वहुवचन
पठमा	असु, अमुको	अमू, अमुयो
दुतिया	अमुं	अमू, अमुयो
ततिया	अमुना	अमूहि, अमूभि
चतुत्थी	अमुस्स	अमूसं, अमूसानं
पञ्चमी	अमुना, अमुम्हा, अमुस्सा	अमूहि, अमूभि
छट्ठी	अमुस्स	अमूसं, अमूसानं
सत्तमी	अमुम्हि, अमुस्मिं	अमूसु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	वहुवचन
पठमा	अदुं, अमुं	अमू, अमूनि
दुतिया	अदुं, अमुं	अमू, अमूनि

शेप रूप पुल्लिग के समान ही होंगे।

स्त्रीलिंग

	एकवचन	वहुवचन
पठमा	असु, अमु	अमू, अमुयो
दुतिया	अमुं	अमू, अमुयो
ततिया	अमुया	अमूहि, अमूभि
चतुत्थी	अमुस्सा, अमुया	अमूसं, अमूसानं
पञ्चमी	अमुया	अमूहि, अमूभि

छट्ठी	अमुस्सा, अमुया	अमूसं, अमूसानं
सत्तमी	अमुस्सं, अमुयं	अमूसु

अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद कीजिए—

१ एसो नरो पलायित्वा गामं आगच्छति। २ एतेन उपायेन मयं धनं लभिस्साम। ३ एतानि धनानि विभजित्वा ते वणिज्जं करिस्सन्ति। ४ एतासु इत्थीसु सामिका राजपुरिसा होन्ति। ५ अयं पुरिसो गामं एव चरति। ६ अनेन दारकेन फलं चोरितं। ७ इमं सालाय गन्त्वा पब्बाजेय्य भन्ते? ८ इमस्मिं विहारो बुद्धस्स अतीव सुन्दरो। ९ इमानि पुप्फानि दिस्वा मयं पमोदथ। १० इमिस्सा गाथाय को अत्थो? ११ इमाय सालाय तुम्हे वसथ। १२ अमुको सोणो पलायित्वा गतो। १३ अमुं फलं नारिकेलं न होति। १४ अमुस्सा वनिताय पति अम्हाकं विज्जालये आचरियो होति। १५ एतस्स गामो नदीकूले अटविया अत्थि।

पालि में अनुवाद कीजिए—

छब्बीसवाँ पाठ

'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द

'वाला' के अर्थ में नाम के आगे 'वन्तु' तथा 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। अकारान्त और आकारान्त शब्दों के आगे 'वन्तु' तथा इकारान्त आदि शब्दों के आगे 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। जैसे—**फलवन्तु** = फल-वाला। **बुद्धिमन्तु** = बुद्धिमान्।

पुल्लिङ्गशब्द

गुणवन्तु (= गुणवाला)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गुणवा	गुणवन्तो, गुणवन्ता
दुतिया	गुणवन्तं	गुणवन्ते
ततिया	गुणवता, गुणवन्तेन	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
चतुत्थी	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं
पञ्चमी	गुणवता, गुणवन्तस्मा, गुणवन्तम्हा	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
छट्ठी	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं
सत्तमी	गुणवति, गुणवन्ते, गुणवन्तस्मि, गुणवन्तम्हि	गुणवन्तेसु
आलपन	गुणवं, गुणव, गुणवा	गुणवन्तो, गुणवन्ता

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गुणवं, गुणवन्तं	गुणवन्ता, गुणवन्तानि
दुतिया	गुणवं, गुणवन्तं	गुणवन्ता, गुणवन्तानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग में 'वन्तु' का 'वती' तथा 'वन्ती' और 'मन्तु' का 'मती' तथा 'मन्ती' हो जाता है। जैसे—**गुणवती, गुणवन्ती। सिरीमती, सिरीमन्ती।** इनके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'इत्थी' शब्द के समान होंगे। (देखिये, ग्यारहवाँ पाठ)।

इन शब्दों के रूप भी 'गुणवन्तु' के समान ही होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कुलवन्तु	अच्छे कुलवाला	**धनवन्तु**	धनवान
पण्णवन्तु	प्रज्ञावान	**फलवन्तु**	फलवाला
बलवन्तु	बलवान	**भगवन्तु**	भाग्यवाला
मघवन्तु	इन्द्र	**यसवन्तु**	यशवाला
सीलवन्तु	शीलवान	**सुतवन्तु**	श्रुतवान
हिमवन्तु	हिमालय	**कलिमन्तु**	कालिमायुक्त
कसिमन्तु	कृषक	**केतुमन्तु**	केतुवाला
गतिमन्तु	गतिवाला	**चक्खुमन्तु**	आँखवाला

काल में 'न्त' और 'मान' प्रत्ययों से पूर्व 'स्स' का आगम हो जाता है। जैसे—**हसिस्सन्तो, हसिस्समानो।**

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसकलिङ्ग में 'फल' शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं।

गच्छन्त (=जाता हुआ)

पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गच्छं, गच्छन्तो	गच्छन्तो, गच्छन्ता,
दुतिया	गच्छन्तं	गच्छन्ते
ततिया	गच्छता, गच्छन्तेन	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
चतुत्थी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
पञ्चमी	गच्छता, गच्छन्तम्हा, गच्छन्तस्मा	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
छट्ठी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
सत्तमी	गच्छति, गच्छन्तस्मिं, गच्छन्तम्हि, गच्छन्ते	गच्छन्तेसु
आलपन	गच्छं, गच्छ, गच्छा	गच्छन्तो, गच्छन्ता

नपुंसकलिंग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गच्छं, गच्छन्तं	गच्छन्ता, गच्छन्तानि
दुतिया	गच्छन्तं	गच्छन्ते, गच्छन्तानि
आलपन	गच्छं, गच्छन्त	गच्छन्ता, गच्छन्तानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के ही समान होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गच्छन्ती	गच्छन्ती, गच्छन्तियो

द्वितीया	गच्छन्ति	गच्छन्ती, गच्छन्तियो
तृतीया	गच्छन्तिया	गच्छन्तीहि, गच्छन्तीभि
चतुर्थी	गच्छन्तिया	गच्छन्तीनं
पञ्चमी	गच्छन्तिया	गच्छन्तीहि, गच्छन्तीभि
षष्ठी	गच्छन्तिया	गच्छन्तीनं
सप्तमी	गच्छन्तिया, गच्छन्तियं	गच्छन्तीसु
आलपन	गच्छन्ति	गच्छन्ती, गच्छन्तियो

इन शब्दों के रूप भी 'गच्छन्त' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अच्चन्त	पूजा करता हुआ	कम्पन्त	काँपता हुआ
अज्जन्त	कमाता हुआ	कीळन्त	खेलता हुआ
अटन्त	घूमता हुआ	गज्जन्त	गरजता हुआ
अदन्त	खाता हुआ	चजन्त	छोड़ता हुआ
चरन्त	विचरण करता हुआ	जीवन्त	जीता हुआ
तिट्ठन्त	खड़ा होता हुआ	भव	आप
मीयन्त	मरता हुआ	सुणन्त	सुनता हुआ
जयन्त	जीतता हुआ	विहरन्त	विचरता हुआ
रुदन्त	रोता हुआ	भुञ्जन्त	खाता हुआ
पचन्त	पकाता हुआ	कुब्बन्त	करता हुआ

९ चक्खुमन्ता बुद्ध अच्चन्ता गेह गच्छन्ति। १०. भरियायो अटवीसु अटन्तियो रोदन्ति। ११. अरञ्ञे सीहा गज्जन्ता चरन्ति। १२. भिक्खवो किलेसे जहन्ता अरहन्तो भवन्ति। १३. नरा इतो मीयन्ता परलोक गच्छन्ति। १४ ददतो पुञ्ञ पवड्ढति। १५. पापकम्म कुब्बन्तो पापकारिनो निरये उप्पज्जन्ति।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. गुणवान् मरकर स्वर्ग में उत्पन्न होता है। २. गुणवानो के पुत्र शीलवान् होते हैं। ३. गुणवती कन्या को कौन नहीं चाहता है। ४. बलवान् लोग दुर्बलों पर अनुकम्पा करते हैं। ५. उसकी पुत्री भाग्यवती होगी। ६. फलवान् वृक्ष शोभा देते हैं। ७. स्मृतिमान् लड़का स्कूल जाते हुए पढ़ता था। ८ हिमालय में पक्षी रहते हैं। ९. यशवान् भिखारी भिक्षा नहीं माँगता है। १०. राजा का भाई खेलता हुआ भी रोता है। ११. उस रथ पर भात खाता हुआ दास बैठेगा। १२. मैं मार्ग में खड़ा होता हुआ तुम्हें देखूँगा। १३. मेरी स्त्री आजकल (=अधुना) अत्यधिक बीमार है। १४. उसका पिता धर्म सुनता हुआ सोता था। १५. वह स्त्री भात पकाती हुई ध्यान बढ़ा रही थी।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द
'मन' (= चित्त)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	मनो	मना, मनानि
दुतिया	मनं, मनो	मने, मनानि
ततिया	मनसा, मनेन	मनेहि, मनेभि
चतुत्थी	मनसो, मनस्स	मनानं
पञ्चमी	मनसा, मनस्मा, मनम्हा	मनेहि, मनेभि
छट्ठी	मनसो, मनस्स	मनान
सत्तमी	मनसि, मने, मनम्हि, मनस्मि	मनेसु
आलपन	मन, मना	मनानि

इन शब्दों के रूप भी 'मन' शब्द के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तम	अन्धकार	तप	तप
तेज	तेज	सिर	सिर
उर	उर	वच	वचन
ओज	ओज	रज	धूल
यस	यश	पय	दूध, पानी
चेत	चित्त	वय	उम्र
सर	तालाब	वास	वस्त्र
अय	लोहा		

परिवारवाची शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ससुर	श्वसुर	मातुल	मामा
भाता	भाई	सहज	भाई
पितामह	बाबा	मातामही	ईंना
अम्मा	माता	ञाति	भाई

मातुलानि	मामी	मातुच्छा	मासी
पितुच्छा	फूआ	मातुज	भतीजा
चुल्लपिता	चाचा	मस्सु	मासु

शरीरावयववाची शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
नख	नख	हत्थ	हाथ
करपुट	हथेली	हदय	हृदय
गल	गला	मुख	मुख
नासिका	नाक	सवण	कान
घाण	नाक	सरीर	शरीर
उरु	छाती	थन	स्तन
उदर	पेट	जघन	चूतड़
पाद	पैर	पिट्ठि	पीठ
खीर	दूध	पस्साव	पेशाब
उच्चार	पाखाना	जंघा	[illegible]
अंगुलि	अंगुलि	केस	केश
लोम	[illegible]	दन्त	दांत

कञ्ञा गाविया खीरेन पायास पचित्वा बोधिसत्तस्स अदासि। १४. सो मारसेन अभिभवित्वा सदेवके लोके सम्मासम्बुद्धो जातो। १५. इसिपतने मिगदाये तथागतेन अनुत्तर धम्मचक्क पवत्तित।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. दाता ने भिखारियों को वस्त्र और अन्न दिया। २. नेता ने लोक को हराकर विजय प्राप्त की। ३. भगवान् बुद्ध (= भगवा बुद्धो) कपिलवस्तु से राजगृह गए। ४ राजगृह में द्वार-द्वारपर भिक्षा माँगी। ५. बिम्बिसार ने उन्हें अपनी आँखों से देखा। ६. दूतों को भेजकर उन्हे राजभवन मे बुलाया। ७. बोधिसत्व ने ज्ञानी के मन को सन्तुष्ट कर दिया। ८. तपोदा नदी का जल गर्म (= उण्ह) होता है। ९. भिक्षु तथागत के साथ उसमें नहाते हैं। १०. वह यक्ष अन्य यक्षों के साथ उपदेश देता हुआ घूमता है। ११ अगुलिमाल ने अगुलियो को गूँथकर माला बनाई १२. वह श्रावस्ती (= सावत्थी) नगर के पास जगल में रहता था। १३ प्रातःकाल ही तथागत जगल की ओर गए। १४. उन्होंने अगुलिमाल को उपदेश देकर भिक्षु बना लिया। १५. अगुलिमाल ने थोडे ही दिनों मे ज्ञान प्राप्त कर लिया और अर्हत् हो गया।

अट्ठाइसवाँ पाठ

संख्यावाचक शब्द

३९.	एकूनचत्तालीसति	७०.	सत्तति
४०.	चत्तालीसति	७२.	द्वेसत्तति, द्विसत्तति, द्वासत्तति
४१	एकचत्तालीसति	७९	एकूनासीति
४२.	द्वेचत्तालीसति, द्विचत्तालीसति	८०.	असीति
४९.	एकूनपञ्ञासति	८१.	एकासीति
५०.	पञ्ञासति, पण्णासति	८२.	द्वेअसीति, द्वियासीति, द्वासीति
५२	द्वेपञ्ञासति, द्वेपण्णासति द्विपञ्ञासति, द्विपण्णासति	८९.	एकूननवुति
		९०	नवुति
५९	एकूनसट्ठि	९२.	द्वेनवुति, द्विनवुति, द्वानवुति
६०.	सट्ठि	९९	एकूनसत
६२.	द्वेसट्ठि, द्वासट्ठि, द्विसट्ठि	१००	सत
६९.	एकूनसत्तति		

सख्यावाचक शब्द प्राय: विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते है, इसलिए उनमे वही लिंग, विभक्ति तथा वचन होते हैं, जो उनके विशेष्य मे।

सख्या के अर्थ में 'एक' शब्द एकवचन ही होता है, किन्तु 'एक' शब्द की गणना सर्वनाम में होती है। यह सख्या, अतुल्य, असहाय तथा अन्य—इतने अर्थों मे प्रयुक्त होता है।*

एक

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एको	एके

---

* उदाहरण इस प्रकार जानना चाहिए—

१ संख्या—एको दारको (= एक लड़का)।

२. अतुल्य—बुद्धो एकोव लोके (= लोक में बुद्ध अतुल्य हैं)।

३. असहाय—अहं एकोव अरञ्ञे विहरामि (= मैं जंगल में अकेला विहार करता हूँ)।

दुतिया	एक	एके
ततिया	एकेन	एकेहि, एकेभि
चतुत्थी	एकस्स	एकेसं, एकेसान
पञ्चमी	एकम्हा, एकस्मा	एकेहि, एकेभि
छट्ठी	एकस्स	एकेसं, एकेसान
सत्तमी	एकम्हि, एकस्मि	एकेसु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एक	एके, एकानि
दुतिया	एक	एके, एकानि

शेष सब पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

चतुत्थी	द्विन्नं, दुविन्नं
पञ्चमी	द्वीहि, द्वीभि
छट्ठी	द्विन्नं, दुविन्नं
सत्तमी	द्वीसु

उभ

'उभ' (=दोनों) शब्द भी बहुवचन होता है और इसके रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं।

	बहुवचन
पठमा	उभो
दुतिया	उभो
ततिया	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
चतुत्थी	उभिन्नं
पञ्चमी	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
छट्ठी	उभिन्नं
सत्तमी	उभोसु, उभेसु

ति

'ति' (= तीन) शब्द भी बहुवचन होता है, किन्तु इसके रूप तीनों लिंगों में भिन्न होते हैं।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पठमा	तयो	तीणि	तिस्सो
दुतिया	तयो	तीणि	तिस्सो
ततिया	तीहि, तीभि	शेष रूप	तीहि तीभि
चतुत्थी	तिण्ण, तिण्णन्नं	पुल्लिङ्ग के	तिस्सन्नं
पञ्चमी	तीहि, तीभि	समान ही	तीहि, तीभि
छट्ठी	तिण्णं, तिण्णन्नं	होंगे	तिस्सन्नं
सत्तमी	तीसु		तीसु

चतु

'चतु' (= चार) शब्द भी बहुवचन होता है। इसके भी रूप तीनों लिंगों में भिन्न होते हैं।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	चत्तारो, चतुरो	चत्तारि	चतस्सो
द्वितीया	चत्तारो, चतुरो	चत्तारि	चतस्सो
तृतीया	चतूहि, चतूभि	शेष रूप	चतूहि, चतूभि
चतुर्थी	चतुन्नं	पुल्लिङ्ग के	चतस्सन्नं
पञ्चमी	चतूहि, चतूभि	समान ही	चतूहि, चतूभि
षष्ठी	चतुन्नं	होंगे	चतस्सन्नं
सप्तमी	चतुसु		चतुसु

	एकवचन
पठमा	एकूनवीसति
दुतिया	एकूनवीसतिं
ततिया	एकूनवीसतिया
चतुत्थी	एकूनवीसतिया
पञ्चमी	एकूनवीसतिया
छट्ठी	एकूनवीसतिया
सत्तमी	एकूनवीसतियं

एकूनवीसति से अट्ठनवुति तक आकारान्त शब्दों के रूप 'लता' शब्द के समान और इकारान्त शब्दों के रूप 'रत्ति' शब्द के समान होंगे।

एकूनसतं

'एकूनसत' (=निन्नानवे) से लेकर सतसहस्स (=लाख) तक, सभी शब्द नपुसक, एकवचन होते है।

	एकवचन
पठमा	एकूनसतं
दुतिया	एकूनसतं
ततिया	एकूनसतेन
चतुत्थी	एकूनसतस्स, एकूनसताय
पञ्चमी	एकूनसता, एकूनसतस्मा, एकूनसतम्हा
छट्ठी	एकूनसतस्स
सत्तमी	एकूनसते, एकूनसतम्हि, एकूनसतस्मिं

'सत' (=सौ) से आगे की सख्यायें इस प्रकार होती है :—

सत	एक पर २ शून्य
सहस्स	,, ३ ,,
नहुत	,, ४ ,,

	बहुवचन
	कति
पठमा	कति
दुतिया	कति
ततिया	कतीहि, कतीभि
चतुत्थी	कतीनं, कतिन्नं
पञ्चमी	कतीहि, कतीभि
छट्ठी	कतीनं, कतिन्नं
सत्तमी	कतीसु

पूरणार्थक शब्द

पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१ पठमो	पठमं	पठमा
२ दुतियो	दुतियं	दुतिया
३ ततियो	ततियं	ततिया
४ चतुत्थो	चतुत्थं	चतुत्थी, चतुत्था
५ पञ्चमो	पञ्चमं	पञ्चमी
६ छट्ठो	छट्ठं	छट्ठा, छट्ठी
७ सत्तमो	सत्तमं	सत्तमा, सत्तमी
८ अट्ठमो	अट्ठमं	अट्ठमा, अट्ठमी
९ नवमो	नवमं	नवमा, नवमी
१० दसमो	दसमं	दसमा, दसमी
११ एकादसो, एकादसमो	एकादसमं	एकादसी
१२ वारसो, वारसमो, द्वादसमो	वारसमं, द्वादसमं	द्वादसी
१३ तेरसो, तेरसमो	तेरसमं	तेरसी
१४ चतुद्दसमो	चतुद्दसमं	चतुद्दसी, चातुद्दसी
१५ पञ्चदसमो, पण्णरसमो	पञ्चदसमं, पण्णरसमं	पञ्चदसी, पण्णरसी

१६	सोळसमो	सोळसमं	सोळसी
१७	सत्तरसमो, सत्तदसमो	सत्तरसमं, सत्तदसमं	सत्तरसी, सत्तदसी
१८	अट्ठारसमो, अट्ठादसमो	अट्ठारसमं, अट्ठादसमं	अट्ठारसी, अट्ठादसी
१९	एकूनवीसतिमो	एकूनवीसतिमं	एकूनवीसतिमा, एकूनवीसतिमी

इसके आगे संख्यावाचक शब्दों के साथ 'म' लगाकर पूरणार्थक शब्द बना लेते हैं। जैसे—एकवीसतिमो, तिसतिमो।

विशेष शब्द

पालि में अनुवाद कीजिए—

१ दास ने आठ आम मुझे दिए। २ तीन दिनों से वह बीमार है। ३. मैंने आज दस कटहल (=पनस) के फलों को खरीदा है। ४. एक स्त्री अपने पति से झगड़ा करके (=कोलाहल कत्वा) दो पुत्रों को ले माता के घर चली गई। ५. भिक्षु लोग सौ वर्ष से अधिक जीते हैं। ६. कितने दिनों से पानी बरस रहा है? ७. चालीस आदमी घास काटते हैं। ८. दासी ने सात पुस्तकें बच्चों को दिए। ९. तथागत अस्सीवें वर्ष में परिनिर्वाण को प्राप्त हुए (=परिनिब्बायि)। १०. एक रुपये में डेढ आम मिलते हैं। ११. सौ कार्षापणों से (=कहापणेहि) एक घर खरीद सकते हो। १२. अढाई दिन में मैं नव कोस आया हूँ। १३. बकरी बारहवें दिन मर गई। १४. हाथियों ने जंगल में डेढ दिन तक वास किया। १५. सौ से अधिक आदमी यहाँ प्रतिदिन काम करते हैं।

उन्तीसवाँ पाठ

परोक्ष समझी जाती है। इस प्रकार के परोक्ष मे, उत्तम पुरुष मे भी परोक्ष भूत का प्रयोग होता है। जैसे—**सुत्तोन्वहं विललाप। मत्तोन्वहं विललाप। अचेनवोहं पठवियं पपत।**

हेतुहेतुमद्भूत

जिस भूतकालिक क्रिया से जाना जाय कि एक क्रिया का होना दूसरी के ऊपर निर्भर था, तो उसे हेतुहेतुमद्भूत कहते है। जैसे—**सचे पठमवये पव्वज्जं अलभिस्सा, अरहा अभविस्सा** (=यदि वह प्रथम आयु में प्रव्रज्या पाए होता, तो अर्हत् हो गया होता)।

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	**अपठिस्सा**	**अपठिस्संसु**
मज्झिम पुरिस	**अपठिस्से**	**अपठिस्सथ**
उत्तम पुरिस	**अपठिस्सं**	**अपठिस्सम्हा**

हेतुहेतुमद्भूत के कुछ विशेष धातु-रूप :—

धातु	रूप
कर	अकाहा, अकरिस्सा
हा	अहाहा, अहायिस्सा
लभ	अलच्छा, अलभिस्सा
वस	अवच्छा, अवसिस्सा
छिद	अच्छेच्छा, अच्छिन्दिस्सा
भिद	अभेच्छा, अभिन्दिस्सा
रुद	अरुच्छा, अरोदिस्सा
भुज	अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा
मुच	अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा
वच	अवक्खा, अवचिस्सा
प + विस	पावेक्खा, पाविसिस्सा
सक	सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा

नु	अन्मोस्सा, अमुणिन्मा
अम	अभविस्सा

अत्तनोपद धातु-रूप

तीसरे पाठ में बतलाया गया है कि पालि में धातु के रूप **परस्सपद** और **अत्तनोपद** दो प्रकार के होते हैं, किन्तु परस्सपद के रूप ही बहुधा प्रयुक्त होते हैं, अतः यहाँ तक सभी धातुओं के परस्सपद (=परस्मैपद) रूप ही दिए गए हैं। यहाँ अत्तनोपद (=आत्मनेपद) में 'पठ' धातु के रूप सभी कालों में दिए जाते हैं। सभी धातुओं के रूप इसी प्रकार होंगे। यह स्मरण रखना चाहिए कि परस्सपद तथा अत्तनोपद के रूपों के प्रयोग में कोई अन्तर नहीं होता।

मज्झिम पुरिस	अपठसे, पठसे	अपठव्हं, पठव्हं
उत्तम पुरिस	अपठं, अपठ, पठं, पठ	अपठम्हे, पठम्हे

विधिलिङ्ग[1]

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	पठेथ	पठेरं
मज्झिम पुरिस	पठेथो	पठेय्यव्हो
उत्तम पुरिस	पठेय्यं	पठेय्याम्हे

अनुज्ञा[1]

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	पठतं	पठन्तं
मज्झिम पुरिस	पठस्सु	पठव्हो
उत्तम पुरिस	पठे	पठामसे

अनद्यतनभूत[2]

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	अपठत्थ	अपठत्थुं
मज्झिम पुरिस	अपठसे	अपठव्हं
उत्तम पुरिस	अपठिं	अपठाम्हसे

परोक्षभूत[1]

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	पपठित्थ	पपठिरे
मज्झिम पुरिस	पपठित्थो	पपठिव्हो
उत्तम पुरिस	पपठिं	पपठिम्हे

हेतुहेतुमद्भूत[1]

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	अपठिस्सथ	अपठिस्सिंसु

१ परस्पद के रूप के लिए देखिये उन्नीसवाँ पाठ ।
२ परस्पद के रूप के लिए देखिये सत्रहवाँ पाठ ।
३—" " " उन्नीसवाँ पाठ ।

मज्झिम पुरिस	अपटिस्ससे	अपटिस्सव्हे
उत्तम पुरिस	अपटिस्सं	अपटिस्साम्हसे

अभ्यास

तीसवाँ पाठ

उपसर्ग

पालि मे अव्यय पॉच प्रकार के होते है—(१) **उपसर्ग**, (२) **निमित्तार्थक**, (३) **पूर्वकालिक**, (४) **तद्धितान्त**, और (५) **रूढ़ि या निपात**। इनमें मे निमित्तार्थक (देखिए इक्कीसवाँ पाठ), पूर्वकालिक (देखिये चौदहवाँ पाठ), तथा निपात (देखिये ग्यारहवाँ पाठ) के वर्णन किए जा चुके है।

उपसर्ग बीस है—**प, परा, नि, नी, उ, दु, सं, वि, अव, अनु, परि, अभि, अधि, पति, सु, आ, अति, अपि, अप, उप**। उपसर्ग धातुओं के प्रारम्भ में लगते हैं। उपसर्ग लगने पर क्रिया के अर्थ में कभी तो कुछ विशेषता हो जाती है, कभी भिन्न और कभी बिल्कुल उल्टा ही अर्थ हो जाता है। जैसे —

जहति = छोड़ता है— पजहति = एकदम छोड़ता है।
गच्छति = जाता है— आगच्छति = आता है।
हरति = हरण करता है— पहरति = मारता है।
आहरति = लाता है— संहरति = संहार करता है।

उपसर्गों के कुछ उदाहरण

१. 'प' उपसर्ग

पब्बजति = घर से निकल जाता है।
पसारेति = फैलाता है।
पच्छिन्दति = काटता है।
पकोपेति = अत्यन्त कुपित होता है।

पभाति = सूर्य चमकता है।
पजानाति = भली प्रकार जानता है।

२ 'परा' उपसर्ग

पराजयति = हराता है।
पलेति = भागता है।
परामसति = स्पर्श करता है।

४ 'नी','नि' उपसर्ग

निक्खमति = निकलता है।
निग्गच्छति = बाहर निकलता है।
निट्ठापेति = समाप्त करता है।
निसामेति = ध्यानपूर्वक सुनता है।

५ 'उ' उपसर्ग

उग्गच्छति = ऊपर उठता है।
उट्ठहति = उठता है।

९. 'अव' उपसर्ग

अवजानाति = निन्दा करता है।
अवसज्जति = छोडता है।
अवमञ्ञति = निरादर करता है।

१०. 'अनु' उपसर्ग

अनुकम्पति = अनुकम्पा करता है।
अनुकरोति = अनुकरण करता है।
अनुजानाति = स्वीकृति देता है।
अनुतप्पति = अनुताप करता है।

११. 'परि' उपसर्ग

परिक्खति = परीक्षा लेता है।
परिभवति = अनादर करता है।
परिसहति = हरा देता है।

१२. 'अभि' उपसर्ग

अभिधावति = किसी ओर दौडता है।
अभिहरति = लाता है।

१३. 'अधि' उपसर्ग

अधिभवति = हरा देता है।
अधिवासेति = स्वीकार करता है।

१४. 'पति' उपसर्ग

पटिक्कमति = लौटता है।
पटिगच्छति = पीछे छोड निकल जाता है।
पटिसंथरति = कुशल मंगल पूछता है।

१५. 'सु' उपसर्ग

सुकत = सुकृत
सुकुमार = कोमल
सुगन्ध = सुगन्ध

१६ 'आ' उपसर्ग

आगच्छति = आता है।

आदाति = लेता है।

आपुच्छति = आज्ञा लेता है।

१७ 'अति' उपसर्ग

अतिक्कमति = पार कर जाता है।

अतिभुञ्जति = पार खाता है।

१८ 'अपि' उपसर्ग

अपिधान = ढकना।

अपिळपति = डींग मारता है।

१९ 'अप' उपसर्ग

अपेति = हट जाता है।

अपक्कमति = निकल जाता है।

भगवा अनाथपिण्डिकस्स जेतवनारामे विहरति। ९. भटो त पुरिस अवसज्जति। १०. मक्कटो कप्पक अनुकरोति। ११. वेज्जो तस्स भरिय परिक्खति। १२. सो मग्गे अभिधावित्वा विहार गच्छति। १३. अह तव पत्थन अधिवासेमि। १४. सुकुमारो राहुलकुमारो पब्बज्ज च उपसम्पदं च अलभि। १५. सो ब्राह्मणो पूरलास अतिभुञ्जित्वा गिलानो जातो।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. मैं गाँव से आ रहा हूँ। २. स्त्री हाथों को फैलाती है। ३. बोधिसत्व ने मार को हरा दिया। ४. मजदूर ने (=कम्मकरो) काम को समाप्त कर दिया। ५. भिक्षु आसन से उठता है। ६. कहाँ से इतनी दुर्गन्ध आ रही है? ७. चोर ने धन को कपड़े से ढँक दिया। ८. मेरे आचार्य कुशीनगर में (=कुसिनाराय) विहार करते हैं। ९. मैं उनका कभी भी अनादर नहीं करता हूँ। १०. पापी परलोक में अनुताप करता है। ११ तथागत ने बिम्बिसार के निमन्त्रण को चुपचाप स्वीकार कर लिया। १२. तुम्हारा भाई बाजार से (= आपणम्हा) आ रहा है। १३. तू अपने पिता से आज्ञा लेकर प्रव्रजित हो। १४. वहाँ से थोड़ी दूर (= थोक) हट जाओ। १५. सुमेधा भिक्षुणी जहाँ भगवान् थे (= येन भगवा), वहाँ (= तेन) गई।

एकतीसवाँ पाठ

तद्धित

नाम (= संज्ञा) में प्रत्यय लगने से जो नये शब्द बनते हैं, उन्हें 'तद्धित' कहते हैं। यह स्मरण रखना चाहिए कि उपसर्ग पहले लगा करते हैं और प्रत्यय पीछे। यहाँ तद्धित के कुछ उदाहरण दिए जाते हैं —

'वाला' अर्थवाले तद्धित शब्द

नाम	प्रत्यय	तद्धित	अर्थ
गति	मन्तु	गतिमन्तु	गतिवाला
सति	मन्तु	सतिमन्तु	स्मृतिवाला
सील	वन्तु	सीलवन्तु	शीलवाला
पञ्ञा	वन्तु	पञ्ञवन्तु	प्रज्ञावाला
दण्ड	इक	दण्डिको	दण्डवाला

तप	ण	तापसो	तप करनेवाला
अभिज्झा	आलु	अभिज्झालु	लोभी
दया	आलु	दयालु	दयावाला
जटा	इल	जटिलो	जटावाला
सील	व	सीलवो	शीलवाला
अण्ण	व	अण्णवो	समुद्र
माया	वी	मायावी	मायावाला
मेधा	वी	मेधावी	बुद्धिवाला
स (=स्व)	आमी	सामी	अधिकार रखनेवाला
स	उवामी	सुवामी	अधिकार रखनेवाला
लक्खी	ण	लक्खणो	लक्ष्मीवाला
अङ्ग	न	अङ्गना	सुन्दर अंगोंवाली
लोम	मो	लोमसो	लोमवाला
पुत्त	इम	पुत्तिमो	पुत्रवाला
सेना	इय	सेनियो	सेनावाला

भाववाची तद्धित शब्द

नाम	प्रत्यय	तद्धित	अर्थ
नील	त्त	नीलत्तं	नीलत्व
बुद्ध	त्त	बुद्धत्तं	बुद्धत्व
मनुस्स	ता	मनुस्सता	मनुष्यता
सहाय	ता	सहायता	सहायता
जाया	त्तन	जायत्तनं	स्त्रीत्व
आलस	ण्य	आलस्सं	आलस्य
दायाद	ण्य	दायज्जं	उत्तराधिकार
सुचि	णेय्य	सोचेय्य	पवित्रता
उजु	ण	अज्जवं	ऋजुता
मुदु	ण	मद्दवं	मृदुता

नग्ग	इय	नग्गियं	नग्नता
सुर	इय	सुरियं	सूरता
आलस	णिय	आलसिय	आलस्य
दास	व्य	दासव्यं	दासता
युव	वण्	योव्वनं	जवानी
अणु	इम	अणिमा	अणुत्व
महन्त	इम	महिमा	महत्व

देवता तथा पूर्णता के अर्थ में

सुगत	ण	सोगतो	बौद्ध
महिन्द	ण	माहिन्दो	महेन्द्र का उपासक
वरुण	ण	वारुणो	वरुण का उपासक
माघी	ण	माघो	माघ मास
फग्गुनी	ण	फग्गुनो	फागुन मास

विभिन्न अर्थों में

किं	रित्तक	कित्तकं	कितना
तारक	इत	तारकितं	तारोंवाला
हत्थ	मत्त	हत्थमत्तं	हाथ भर
सत	मत्त	सतमत्तं	सौ भर
जाणु	मत्त	जाणुमत्तं	घुटने भर
जाणु	तग्घ	जाणुतग्घं	घुटने भर
पुरिस	ण	पोरिसं	पुरुष भर ऊँचा
उभ	अय	उभयं	दोनों अंश
ति	अय	तयं	तीनों अंश
एक	क	एकको	अकेला
एक	आकी	एकाकी	अकेला
पाप	रतर	पापतरो	महापापी
पाप	रतम	पामतमो	अत्यन्त पापी
पाप	इस्सिक	पापिस्सिको	अत्यन्त पापी
कण	इय	कणियो	छोटा
कण	इट्ठ	कनिट्ठो	सबसे छोटा
व्याकरण	ण	वेय्याकरणो	व्याकरण जाननेवाला
पद	क	पदको	पद जाननेवाला
सुत्तन्त	णिक	सुत्तन्तिको	सुत्तन्त जाननेवाला
सूकर	णिक	सूकरिको	सूअर मारनेवाला
वेद	ल्ल	वेदल्लं	प्रसन्नता से युक्त
दक्षिणा	णेय्य	दक्खिणेय्यो	दक्षिणा पाने योग्य
काय	णिक	कायिकं	शरीर से किया गया
हलिद्द	ण	हालिद्दं	हल्दी के रंग में रँगा
देव	ल	देवलो	देवता द्वारा दिया गया
ब्रह्म	इय	ब्रह्मियो	ब्रह्मा द्वारा दिया गया
पाक	इम	पाकिमं	पकाया हुआ

लोक	णिक	लोकिको	लौकिक
माता	णिक	मत्तिकं	माता की ओर से आया
रघु	ण	राघवो	रघु का पुत्र
वसिट्ठ	ण	वासिट्ठो	वशिष्ठ का पुत्र
वच्छ	णान	वच्छानो	वत्स गोत्र में उत्पन्न
कच्चान	णायन	कच्चायनो	कात्यायन गोत्र में उत्पन्न
समण	णेर	सामणेर	श्रमण का वंशज
भगिनी	णेय्य	भागिनेय्यो	भांजा
दिति	ण्य	देच्चो	दिति का वंशज
कुण्डिनि	ण्य	कोण्डञ्ञो	कुण्डिनि का वंशज
दोण	णि	दोणि	द्रोण का वंशज
राज	ञ्ञो	राजञ्ञो	राजा की जाति का
खत्त	इय	खत्तियो	क्षत्रिय जाति का
मनु	स्स	मनुस्सो	मनुष्य

मातु	छ	मातुच्छा	मौसी
पितु	छ	पितुच्छा	फूआ
पितु	आमह	पितामहो	बाबा
,,	,,	पितामही	ईया
मातु	,,	मातामही	नानी
,,	,,	मातामहो	नाना
मातु	रेय्यण	मत्तेय्यो	माता के लिए
वच्छ	तर	वच्छतरो	छोटा बछड़ा
कपोत	ण	कापोतं	कबूतर का
कप्पास	णिक	कप्पासिकं	कपास का बना
कोस	णेय्य	कोसेय्यं	रेशम का बना
तिण	मय	तिणमयं	तृण का
गो	मय	गोमयं	गोबर
जतु	स्सण	जातुस्सं	लाह का बना
मनु	कण	मानुस्सकं	मनुष्यों का जमाव
काक	ण	काकं	कौवों का राजा
आपूप	णिक	आपूपिकं	पूए की ढेर
जन	ता	जनता	जन-समूह
बन्धु	ता	बन्धुता	बन्धु-समूह
चक्खु	स्स	चक्खुस्सं	चक्षु के लिए
मुदु	जातिय	मुदुजातियो	कोमल स्वभाव का
उर	ण	ओरसो	औरस
मगध	ण	मागधो	मगध में उत्पन्न
कपिलवत्थु	ण	कापिलवत्थवो	कपिलवस्तु में उत्पन्न
पुरा	तन	पुरातनो	पुरातन
अमा(=साथ)	अच्च	अमच्चो	साथ रहनेवाला मन्त्री
मज्झ	म	मज्झिमो	मध्य का

सुहज्जो	सुहृद, सज्जन
सोहज्जं	सुहृदता
आरिस्सं	ऋषि का
आसभं	साँढ़ का
आजञ्ञं	आजानीयता
थेय्यं	चोरी
बाहुसच्चं	बहुश्रुतता

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. गतिमन्ता वेगेन धावन्ति। २. दण्डिको दण्डेन चोर पहरि। ३. धनिको एक विहार भिक्खून कारापेसि। ४. अत्थिको धन परियेन्सिस्सति। ५. तपस्सी तप कत्वा सग्ग गमिस्सति। ६. अण्णवे महाजलरासि अत्थि। ७. अङ्गना अत्तनो रूप आदासे (=शीशा में) ओलोकेति। ८. लोमसा तापसी विहारं छड्डेत्वा कुहि गता? ९. किच्चे सति (=होने पर) आलस्स कातु न वट्टति। १०. त अह दासब्या मोचेमि। ११ सोगता सदा चेतिय वन्दन्ति। १२. हत्थमत्त भूमि याचित्वा अपि नालद्ध। १३. कनिट्ठो भाता अज्ज इतो नगर गतो। १४. कायिक पापकम्म कटुकप्फल होति। १५. कोसिनारको धम्मरक्खितो भिक्खु इम पोत्थकं लिखति।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. वह वाराणसी का रहनेवाला भिक्षु कब यहाँ आयेगा? २. मैं बोझ ढोनेवाले बैल के समान हूँ। ३. धर्म-कथित आज उपदेश देगा। ४. द्वारपाल भीतर नहीं जाने देगा। ५. श्मशान में रहनेवाला भिक्षु ध्यान-लाभी (=ज्ञानलाभी) है। ६. मेरा औरस पुत्र स्कूल में अब पढ़ता है। ७. जनता भूख से (=जिघच्छाय) मर रही है। ८. भारतवर्ष में (=जम्बु-दीपे) कोई राजा नहीं है। ९ कपास का वस्त्र कोमल (=मुदु) होता है।

बत्तीसवाँ पाठ

तद्धितान्त अव्यय

संज्ञा और सर्वनाम के पीछे तद्धित के कुछ प्रत्यय लगने से अव्यय बन जाते हैं, उन्हें ही 'तद्धितान्त'[1] कहते हैं। वैसे प्रत्यय चौदह हैं—(१) तो, (२) त्र, (३) त्थ, (४) धि, (५) हिं, (६) ह, (७) दा, (८), था, (९) धा, (१०) क्ख, (११) एधा, (१२) क्खत्तु, (१३) सो और (१४) ची।

प्रत्यय	तद्धितान्त	अर्थ
१. तो*	चोरतो	चोर से
	कुतो	कहाँ से
	ततो	वहाँ से
	यतो	जहाँ से
	इतो	यहाँ से
	अतो	यहाँ से
	अभितो	दोनों ओर से
	परितो	चारों ओर से
	पच्छतो	पीछे से
	हेट्ठतो	नीचे से

१. देखिये तीसवाँ पाठ।

* 'तो' प्रत्यय पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'तो' प्रत्यय के लग जाने पर शब्द अव्यय हो जाता है। जैसे—गामस्मा गच्छति=गामतो गच्छति (=गाँव से जाता है)।

आदितो	प्रारम्भ मे
मज्झतो	बीच मे
अन्ततो	अन्त मे
पिट्ठितो	पीछे मे
पस्सतो	पार्श्व मे
मुखतो	सामने मे
सब्बत्र, सब्बत्थ	सर्वत्र
यत्र, यत्थ	जहाँ
तत्र, तत्थ	वहाँ
परत्र, परत्थ	दूसरा जगत
सब्बधि	सब जगह

	यथा	जैसे
	तथा	वैसे
९. धा	द्विधा	दो भाग में
	एकधा	एक भाग मे
	बहुधा	बहुत भाग मे, प्राय.
१०. एधा	द्वेधा, द्विधा	दो प्रकार से
	तेधा, तिधा	तीन प्रकार से
११. ज्झं	एकज्झं	एक प्रकार से
१२. क्खत्तुं	द्विक्खत्तुं	दो बार
	कतिक्खत्तुं	कितनी बार
	बहुक्खत्तुं	बहुत बार
१३. सो	खण्डसो	खण्ड खण्ड करके
	एकेकसो	एक-एक करके
	पुथुसो	विस्तार से
	सब्बसो	सब प्रकार मे
१४ ची	धवली करोति	उजला करता है
	धवली सिया	उजला होने
	धवली भवति	उजला होता है

ये शब्द निपात हैं :—

कत्थ, कुत्र, क्व,	कहाँ
अत्र, एत्थ	यहाँ

इध, इह	यहाँ
कदा, कुदा	किस समय
सदा	हमेशा
अधुना, इदानि	इस समय
अज्ज	आज
सज्जु	उसी दिन
अपरज्जु	दूसरे दिन
एतरहि	इस समय
करहि	किस समय
कथं	कैसे
इत्थं	इस प्रकार

अभ्यास

तुम सदा ही सोते रहते हो। ४. जहाँ से जो मिले ले लो। ५ प्रारम्भ से ही लड़कों को स्कूल भेजूँगा। ६. उसने नीचे से पेड़ काटा। ७. तथागत सर्वत्र ही जाते हैं। ८. वे कहीं भी नहीं बैठते। ९. स्त्री को पुत्र कब उत्पन्न हुआ? १०. वाराणसी में एक बौद्ध (=सोगतो) रहता है। ११. वहाँ के लोग उसे श्यामचरण नाम से (=सामचरणोति नामेन) जानते हैं। १२. उसी की पुत्री का नाम मल्लिका है। १३. मैं वहाँ गया था और उनके साथ बातचीत (=कथासल्लाप) की थी। १४. उन्होंने दो बार मेरी वन्दना की। १५ बहुत बार उन्होंने मुझे भोजन दिया। १६. वे प्रारम्भ से ही बुद्धधर्म में (=बुद्धधम्मे) श्रद्धावान् हैं।

तेंतीसवाँ पाठ

कृदन्त

निपज्जितब्बं=लेटना चाहिए।

भेतब्बं – फोड़ना चाहिए।

कातब्बं=करना चाहिये।

भवितब्बं=होना चाहिये।

निसीदितब्बं=बैठना चाहिए।

प्रायः ऊपर के ही अर्थ में धातु से परे 'घ्यण' प्रत्यय आता है। 'घ्यण' का 'य' रह जाता है—

मया इदं न वाक्यं=मुझे यह नहीं कहना चाहिए।

सिस्सेन पुप्फानि चेय्यानि=शिष्य को फूल चुनने चाहिये।

धनिकेहि दलिद्दानं दानं देय्यं=धनिकों द्वारा दरिद्रों को दान देना चाहिए।

अच्छानि जलानि पेय्यानि=स्वच्छ जल पीने चाहिए।

चेय्यं=चुनना चाहिये।

वज्जं=निन्दनीय

किच्चं=कृत्य

गुय्हं=छिपाना चाहिए।

'इस काम को करने वाला' अर्थ मे धातु से परे 'त्तु' और 'णक' प्रत्यय होते हैं। 'त्तु' का 'तु' और 'णक' का 'अक' रह जाता है—

दातु, दायको=देने वाला

वत्तु, वाचको=बोलने वाला

नेत्तु, नायको=नायक

सोतु, सावको=सुनने वाला

जेतु, × =जीतने वाला

छेत्तु, छेदको=छेदने वाला

प्रत्यय	कृदन्त	अर्थ
आवी	भयदस्सावी	भय देखने वाला
अक	जीवको	बहुत दिन जीने वाला

,,	सति	स्मृति
,,	वद्धि	वृद्धि
क	रुजा	पीडा
,,	मुदा	मोद
यक	विज्जा	विद्या
,,	इच्छा	इच्छा
य	पब्बज्जा	प्रव्रज्या
अन	वेदना	वेदना
,,	वन्दना	वन्दना
अन	गमनं	जाना
,,	दानं	दान
,,	सरणं	शरण
नि	हानि	हानि
,,	जानि	खराब होना
इ	वचि	बोलना
,,	युधि	लडाई करना

भूतकाल के अर्थ में धातु से परे 'क्तवन्तु' और 'क्तावी' प्रत्यय होते हैं :—

जि	विजितवन्तु	विजय पाया हुआ
,,	विजितावी	,,

भूतकाल के अर्थ में कर्म और भाववाचक में 'क्त' प्रत्यय होता है—

धातु	कृदन्त	अर्थ
कर	कतं	किया गया
वि + जि	विजितं	जीता गया, राज्य
हस	हसितं	हँसा गया
कर	पकतो	किया गया

सु	पसुत्तो	सोया हुआ
ठा	उपट्ठिनो गुरु सेव	आपने गुरु की सेवा की
भुज	इह तेसं भुत्तं	इस स्थान पर उन लोगोंने भोजन किया था।
दिस	दिट्ठो	देखा गया।
गद	गेदिन	गाया गया।

'क्तवतु' और 'क्त' प्रत्यय बाद कुछ विशेष धातु के रूप इस प्रकार होते हैं —

यज = इट्ठवा, यिट्ठवा, इट्ठुं, यिट्ठुं
वह = वुड्ढवा, वुड्ढं

ये कृदन्त निपात हैं—

थावर	स्थित रहनेवाला
इत्तर	जानेवाला
भंगुर	टूटनेवाला
भिदुर	नष्ट हो जानेवाला
भासुर, भस्सर	चमकनेवाला
धस्तो	ध्वस्त होनेवाला
त्रस्तो	भयभीत

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. मया त किच्च कातब्ब। २. विहारे सम्मज्जनकम्म (= झाड़ू लगाना) कातब्ब। ३. भिक्खूहि धम्मो पकासितब्बो। ४. करणीयानि किच्चानि न हातब्बानि ५ सब्बेसं ज्ञान ब्रूहेतब्ब। ६. कत्तब्ब कुसल बहु। ७. त्वया दान देय्यं। ८. किञ्चि वज्ज कम्म कातु न वट्टति। ९. दायको वन गन्त्वा दारुनि छिन्दति। १० सावको धम्म सुत्वा पुञ्ञ करोति। ११. मय लोके भयदस्साविनो भविस्साम। १२. लोकविदू सत्था पुग्गले ओलोकेत्वा दान न गण्हति। १३. सयम्भू सय धम्म सच्छिकत्वा अभिञ्ञाय परिक्खति। १४. विजितावी अत्तनो विजिते आण करोति। १५. दिट्ठो मया लोके हीनतरो पुग्गलो।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. तुम्हें खाना खा लेना चाहिए। २. उसे बहुत नहीं हँसना चाहिए। ३ मेरे पास स्नान करने वाला चूर्ण है। ४. हमें भारतवर्ष का भिक्षु होना चाहिए। ५. चैत्य के पास जाकर आसन पर बैठना चाहिए।

चौंतीसवाँ पाठ

सन्धि

पालि में सन्धि तीन प्रकार की होती है—(१) स्वर सन्धि, (२) व्यञ्जन सन्धि और (३) निग्गहीत सन्धि। पालि में विसर्ग न होने के कारण 'विसर्ग-सन्धि' नहीं होती। सन्धियों की पूरी जानकारी साहित्य के अध्ययन से ही होती है। यहाँ जो नियम हैं, वे विशेष शब्दों की सन्धियों पर ही आधृत हैं। कोई एक नियम नियत नहीं है। अतः इन नियमों को पढ़कर घबड़ाना नहीं चाहिए, प्रत्युत इनका अभ्यास करना चाहिए, क्योंकि पालि साहित्य में आई हुई सन्धियाँ ही यहाँ उदाहृत हैं, जो सर्वत्र इसी प्रकार रहती हैं।

स्वर सन्धि

दो स्वरों के परस्पर मिलने को स्वर-सन्धि कहते हैं।

१ **सरो लोपो सरे**—स्वर से परे यदि स्वर हो तो कभी-कभी पूर्व स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—पुरिस + उत्तमो। यहाँ पुरिस् + अ + उत्तमो। पुरिस् + उत्तमो=पुरिसुत्तमो।

ऐसे ही—

पञ्ञा + इन्द्रिय = पञ्ञिन्द्रिय

सति + आरक्खो=सतारक्खो

भोगी + इन्दो=भोगिन्दो

चक्खु + आयतन=चक्खायतन

अभिभू + आयतन=अभिभायतन

धनम्मे + अग्गि=धनम्मग्गि

ऐसे ही—

लता + इव = लताइव

किन्तु विकल्प से कञ्ञेव, कञ्ञाव तथा लतेव, लताव भी होता है।

४. **युवण्णानमे ओ लुत्ता**—लुप्त हुए स्वर से परे क्रमशः 'इ' का कभी-कभी 'ए' और 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—

तस्स + इद = तस्स् + इद = तस्स् + एद = तस्सेद।

ऐसे ही—

वात + ईरित = वातेरित

वाम + उरू = वामोरू

सीत + उदक=सीतोदक

वि + उदक=वोदक

५. **यवा सरे**—'इ' तथा 'उ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी-कभी उनका क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

सु + आगत=स्वागत

वि + अकासि = व्याकासि

वि+आकतो=व्याकतो

इति+अस्स = इच्चस्स

अधि+इणमुत्तो=अज्झिणमुत्तो

बहु+आबाधो=बव्हाबाधो

६. **ए ओ नं**—'ए' तथा 'ओ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी-कभी उनका क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

ते + अज्ज=त्यज्ज

सो+अहं=स्वाहं

सो+अयं = स्वायं

मे+अयं=म्यायं

पब्बते+अहं=पब्बत्याहं

छ + अभिञ्ञा = छळभिञ्ञा

छ + अङ्ग = छळङ्ग

छ + आयतनं = छळायतन

निम्नलिखित सन्धि निपात हैं:—

तथा + एव = तथरिव

यथा + एव = यथरिव

व्यञ्जन सन्धि

जब कोई व्यञ्जन (= वर्ण) किसी व्यञ्जन अथवा स्वर के साथ मिलता है, तो उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

१. **व्यञ्जने दीघरस्सा**—जब किसी स्वर के बाद व्यञ्जन हो, तो पूर्व-स्थित ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर का क्रमश. दीर्घ तथा ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

तत्र + अभिरति = तत्राभिरति

खन्ति+परम=खन्तीपरम

मुनि+चरे = मुनीचरे

माला+भारी = मालभारी

जायति+सोको=जायती सोको

तत्र+अय=तत्राय

२. **सरम्हा द्वे**—स्वर से परे व्यञ्जन हो, तो उस व्यञ्जन का कभी-कभी द्वित्व हो जाता है। जैसे—

वि+गहो=विग्गहो

प+गहो + पग्गहो

दु+कत=दुक्कत, दुक्कट

३. **चतुत्थ दुतियेस्वेसं ततिय पठमा**—यदि किसी वर्ग के

दिव्य = दिब्ब

पर्येसना = पय्येसना

पोक्खरण्यो = पोक्खरञ्ञो

अध्यत्त = अज्झत्त

६. **वग्गलसेहि ते**—वर्गीय वर्ण, 'ल' या 'स' 'य' के साथ संयुक्त हों तो 'य' का भी वही अक्षर हो जाता है। जैसे—

सक्यते = सक्कते

रुच्यते = रुच्चते

पट्यते = पट्टते

सल्यते = सल्लते

दिस्यते = दिस्सते

फल्यते = फल्लते

अस्यते = अस्सते

७. **हस्स विपल्लासो**—यदि 'ह', 'य' से संयुक्त हो, तो उनका उलट-पलट हो जाता है। जैसे—

गुह्य = गुय्ह

मुह्यति = मुय्हति

८. **वे वा**—यदि 'ह' 'व' से संयुक्त हो, तो विकल्प से उनका उलट-पलट हो जाता है। जैसे—

बह्वाबाधो = बव्हाबाधो

निग्गहीत सन्धि

निग्गहीत अर्थात् अनुस्वार के साथ जब कोई स्वर या व्यञ्जन मिलता है, तो निग्गहीत-सन्धि होती है।

१. **निग्गहीतं**—कहीं-कहीं निग्गहीत (= अनुस्वार) का आगम होता है। जैसे—

पुप्फ + अस्सा=पुप्फसा (यहाँ 'अम्' जो आदिभूत अवयव है, उसका लोप हो गया है)।

जायते + अग्गिनि=जायते गिनि (यहाँ 'अग्' जो आदिभूत अवयव है, उसका लोप हो गया है)।

५. वग्गे वग्गन्तो—निग्गहीत से परे कोई वर्गीय वर्ण रहे, तो विकल्प से निग्गहीत का उसी वर्ग का अन्तिम वर्ण हो जाता है। जैसे—

त + करोति= तङ्करोति

त + चरति=तञ्चरति

त + ठान=तण्ठान

त + धन=तन्धन

त + पाति=तम्पाति

त + खण=तङ्खण

धम्म + चरे=धम्मञ्चरे

त + डहति=तण्डहति

त + दान=तन्दान

त + फल=तम्फल

६ येवहि सुञो—यदि बाद में 'य' तथा 'हि' शब्द हों, तो पूर्वस्थित निग्गहीत का कहीं कहीं 'ञ' हो जाता है। जैसे—

आनन्तरिक+यमाहु = आनन्तरिकञ्ञमाहु

(यहाँ 'वग्गलसेहि ते' सूत्र से 'ञ' का 'ञ्ञ' हो गया है)।

पच्चत्त+एव=पच्चत्तञ्ञेव

त+हि = तञ्हि

त+येव = तञ्ञेव

य+येव=यञ्ञदेव (यहाँ 'द' का आगम हो गया है)।

७ ये सस्स—'य' परे हो, तो पूर्वस्थित 'स' शब्द के निग्गहीत का 'ञ' हो जाता है। जैसे—

सं + यमो = सञ्ञमो

सं+यतो = सञ्ञतो

मयदा सरे—स्वर पर हो, तो कहीं कहीं पूर्वस्थित निग्गहीत का 'म', 'य' तथा 'द' आदेश हो जाता है। जैसे—

तं+अहं = तमहं

तं+एव=तमेव

तं + इदं=तयिदं

तं + अलं=तदलं

तदमिनादीनि—निम्नलिखित सन्धि निपात हैं—

तं+इमिना=तदमिना

सकं+आगामि=सकदागामी

एकं+इध+अहं=एकमिदाहं

संविधाय+अवहारो = संविदावहारो

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दातुम्पि । २६. कथाह । २७. यावञ्चिध । २८. चक्कव । २९. तञ्चण । ३०. सण्ठितो ।

सन्धि कीजिए:—

१. महा + ओघो । २. अज्ज + उपोसथो । ३. अग्गि + आहितो । ४. चक्खु + इन्द्रियानि । ५. सु + आगत । ६. अह खो + अज्ज । ७. पातु + अकासि । ८. वि + आकतो । ९ वुत्ति + अस्स । १०. बहु + आबाधो ।

११. सम्मा + पधाना । १२. अग्गो + अक्खायति । १३. एसो + अत्थो । १४. अ + फुट । १५. मधुव + मञ्ञति । १६. जायति + भय । १७. नि + ठान । १८. सम्म + धम्मो । १९. यस + थेरो । २०. खन्ति + परमं ।

२१. य + आहु । २२. त + पाति । २३. त + धन । २४. त + सभावो । २५. पुरिस + जाति । २६. याव + चिध । २७. अनु + थूलानि । २८. बुद्धान + सासन । २९. एव + अह । ३०. किं + इति ।

पैंतीसवॉ पाठ

समास

(५) अभाव	नि	अभावो मक्खि-कान	निम्म-क्खिकं	मक्खियों से रहित
,,	दु	विगता द्दद्धि सद्दिकान	दुस्सद्दिकं	शब्दों से रहित
,,	नि	अतिगतानि तिणानि	निच्चिणं	तृणों से रहित
		अद्धमास अद्धमास	अन्वद्धमासं	हर आधे महीने
(६) यथा	अनु	रूपस्स योग्ग	अनुरूपं	रूप के योग्य
,,	,,	सत्ति अनतिकम्म	यथासत्ति	यथाशक्ति
,,	यथा	रथस्स पच्छा	अनुरथं	रथ के पीछे
(७) पश्चात्	अनु	सह चक्केन	सचक्कं	चक्र के साथ
(८) युगपद	सह	सह धुरेन	सधुरं	बोझ के साथ
,,	सह			

अव्ययीभाव समास के कुछ उदाहरण

अव्यय	समास	भाव
याव	यावमत्तं ब्राह्मणे आमन्तय	जितने ब्राह्मणों को बुलाओ
,,	यावजीवं	जीवनभर
परि	परिपब्बतं वस्सि देवो	पर्वत के चारों ओर वर्षा हुई
अप	अपपब्बतं ,, ,,	पर्वत को छोड़ कर वर्षा हुई
आ	आपाटलिपुत्तं ,, ,,	पाटलिपुत्र तक वर्षा हुई
बहि	बहिगामं	गाँव के बाहर
तिरो	तिरोपब्बतं	पर्वत के भीतर
पुरे	पुरेभत्तं	भोजन से पहले
पच्छा	पच्छाभत्तं	भोजन के बाद
अनु	अनुवनं असनि गता	वन के समीप बिजली गई
,,	अनुगङ्गं बाराणसी	गंगा के किनारे वाराणसी है।

ओरे	ओरेगङ्गं	गंगा के इस पार
उपरि	उपरिसिखरं	शिखर के ऊपर
पटि	पटिसोतं	भाग के विपरीत
पार	पारयमुनं	यमुना के उस पार
मज्झे	मज्झेगङ्गं	गंगा के बीच
हेट्ठा	हेट्ठापासादं	प्रासाद के नीचे
उद्धं	उद्धंगङ्गं	गंगा के ऊपर
अधो	अधोगङ्गं	गंगा के नीचे
अन्तो	अन्तोपासादं	प्रासाद के भीतर
परो	परोसतं	सौ से अधिक
	परोसहस्सं	सहस्र से अधिक

निम्नलिखित अव्ययीभाव समास निपात हैं—

विभक्तियों में विभक्ति-चिह्नों का लोप हो जाता है, उनमें तत्पुरुष समास होता है।

दुतिया, ततिया, चतुत्थी, पञ्चमी, छट्टी और सत्तमी विभक्तियों में पूर्वपद की विभक्ति का लोप होता है। पूर्वपद जिस विभक्ति में होता है, वह समास उसी विभक्ति के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार तत्पुरुष समास छः प्रकार का होता है। जैसे—

नाम	विग्रह	समास	अर्थ
१.दुतिया	गाम गतो	गामगतो	गाँव गया हुआ
,,	मुहुत्त सुख	मुहुत्तसुखं	मुहूर्त भर सुख
,,	कुम्भ करोति	कुम्भकारो	कुम्हार
,,	तन्त वायति	तन्तवायो	जुलाहा
,,	वर हरति	वराहरो	सूअर
२.ततिया	असिना छिन्नो	असिच्छिन्नो	तलवार से कटा हुआ
,,	पितुना सदिसो	पितुसदिसो	पिता के समान
,,	सुखेन सहगत	सुखसहगतं	सुख के साथ
,,	उरसा गच्छति	उरगो	साँप
,,	पादेन पिवति	पादपो	वृक्ष
३.चतुत्थी	धम्मस्स देय्य	धम्मदेय्यं	धर्मको देने योग्य
,,	बुद्धस्स देय्य	बुद्धदेय्यं	बुद्ध को देने योग्य
,,	यूपाय दारु	यूपदारु	यज्ञस्तम्भकी लकडी
,,	रजनाय दोणि	रजनदोणि	वस्त्र रंगने की द्रोणी
४. पञ्चमी	चोरेहि भय	चोरभयं	चोरों से भय
,,	गामस्मा निग्गतो	गामनिग्गतो	गाँव से निकला हुआ
,,	मेथुनस्मा अपेतो	मेथुनापेतो	मैथुन से दूर रहनेवाला
,,	कम्मा जात	कम्मजं	कर्म से उत्पन्न
,,	चित्तेन जात	चित्तजं	चित्त से उत्पन्न

विग्रह	समास	अर्थ
नीलं च त उप्पल चाति	नीलुप्पलं	नीला कमल
मुनि च सो सीहो चाति	मुनिसीहो	मुनि
सीलमेव धन	सीलधनं	शील-धन
कण्हो सप्पो	कण्हसप्पो	काला साँप
न ब्राह्मणो	अब्राह्मणो	अब्राह्मण
न ओकास	अनोकासं	अवकाश नहीं
कुच्छितो ब्राह्मणो	कुब्राह्मणो	निन्दित ब्राह्मण
कु अन्न	कदन्न	खराब अन्न
कु पुरिसो	कापुरिसो	बुरा आदमी
ईसकं उण्ह	कदुण्हं	थोडा गर्म
पगतो आचरियो	पाचरियो	आचार्य के आचार्य
निग्गतो कोसम्बिया	निग्गतकोसम्बि	कौशाम्बी से निकला हुआ

कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरणः—

अरियेहि पुथगेवायं जनोति = पुथुज्जनो = पृथक्जन

छन्न अहान समाहारो = साहं, छाहं = छ. दिन

छन्न आयतनान समाहारो = सळायतनं, छळायतनं=छः आयतन

समानो पक्खो = सपक्खो = पाँख के समान

समाना जोति = सजोति = प्रकाश के समान

पुब्बो अहो = पुब्बण्हो = पूर्वाह्न

मज्झो अहो = मज्झण्हो = मध्याह्न

सायो अहो = सायण्हो = सायह्न

पञ्चन्न गुन्न समाहारो = पञ्चगवं = पाँच बैल

चतुन्न पथान समाहारो = चतुप्पथं = चार मार्ग

तिन्न लोकान समाहारो = तिलोकं = तीन लोक

चतुन्न सच्चान समाहारो = चतुसच्चं = चार सत्य

दुविधो = द्वे विधा पकारा अस्स
द्वत्तिपत्तपूरा = द्वे वा तयो वा वारे पत्तानि पुण्णानि येस
तंसरणा = त्व येस सरण एस
सोदरियो = समान उदर यस्स
सास्सत्थं = सह अस्सत्थेन वत्तति
साग्गि = सह अग्गिना विज्जमानो
सदोणा = अधिको दोणो अस्स

५. क्रियार्थ

जब दो क्रियाओं के कुछ विशेष प्रत्ययान्त शब्दों के साथ समास होता है तो उसे क्रियार्थ समास कहते है। जैसे—**मलीनीकरिय**=मैला करके।

क्रियार्थ समास प्राय 'च', 'री', 'रिक्ख' और 'क' प्रत्ययान्त शब्दों साथ ही होता है।

क्रियार्थ समास	अर्थ
अलङ्करिय	अलङ्कृत करके
सक्कच्च	सत्कार करके
असक्कच्च	असत्कार करके
तिरोभूय	छिपकर
तिरोकरिय	छिपाकर
उरसिकरिय	हृदय में करके
मनसिकरिय	मन में करके
मज्झेकरिय	बीच में करके
तुण्हीभूय	मौन होकर
पुरोभूय	आगे होकर
सरी, सदी सरिक्खो, सदिक्खो सरिसो, सदिसो	सदृश

यादृी यादिक्खो, यादिसो
भवादृी, भवादिक्खो, भवादिसो
कीदृी, कीदिक्खो कीदिसो
ईदृी, ईदिक्खो, ईदिसो
तादृी तादिक्खो, तादिसो
मादृी मादिक्खो, मादिसो
एदृी एतादृी एदिक्खो
एतादिक्खो, एदिसो, एतादिसो }
इत्यादि
इत्यान

मुख च नासिका च = मुखनासिकं

चक्खु च सोत च = चक्खुसोतं

गीतं च वादित च = गीतवादितं

युग च नङ्गल च = युगनङ्गलं

असि च चम्म च = असिचम्मं

काको च उलूको च = काकोलूकं

एकको च दुको च = एककदुकं

डसो च मकसो च = डंसमकसं

साकुन्तिको च मागविको च = साकुन्तमागविकं

समथ च विपस्सनं च = समथविपस्सनं

दीघो च मज्झिमो च = दीघमज्झिमं

इत्थी च पुमो च = इत्थिपुमं

कण्हो च सुक्को च = कण्हसुक्कं

पुब्ब च उत्तर च = पुब्बुत्तरं

गङ्गा च यमुना च = गङ्गयमुनं

मही च सरभू च = महीसरभु

स्मरण रखना चाहिए कि प्राणी के अंग, बाजो के नाम, हल के अंग, सेना के अंग, नित्य वैरी, संख्या, परिमाण, क्षुद्र जन्तु, छोटी जाति, चरण, ग्रन्थों के नाम, लिङ्ग विशेष, विरुद्ध स्वभाव, दिशा तथा नदी के नामों में सदा समाहार द्वन्द्व समास होता है।

तथा

तृण, वृक्ष, पशु, पक्षी, धन वाचक शब्द, धान्य के नाम, व्यञ्जन और जनपदों में समाहार तथा इतरेतर—दोनों द्वन्द्व समास होते हैं।

समाहार और इतरेतर द्वन्द्व के कुछ उदाहरण—

इन शब्दों में दोनों ही समास होते हैं :—

कासकुसं, उसीरवीरणं, मुञ्जबब्बजं। खदिरपलासं, साक-

साल । गोमहिंस, अजेळक, कुक्कुटसूकर । हंसबलाक, चक्क-
वाक । हिरञ्ञसुवण्ण, जातरूपरजत, मणिसङ्खमुत्तावेळुरिय ।
सालियव, तिलमुग्गमास । साकसुत्त, गन्धमालिस, पणोदय
वासाड निगमाखुर । कासिकोसल्ल, वज्जिमल्ल, मच्छसूरसेन,
कुरुपञ्चाल ।

[६] ६२. अहोरत्त, ६३. दीघरत्त, ६४. द्विरत्त, ६५. दसगव, ६६. सारिपुत्तमोग्गल्लाना, ६७. चन्दसुरिया, ६८. अग्गिधूम, ६९. हसबका, ७०. अङ्गमगध ।

समास कीजिए—

[१] १. रथस्स पच्छा, २. गगाय समीपे वत्ततीति, ३. मञ्चस्स हेट्ठा, ४. सोतस्स पटिलोम, ५ भत्तस्स पच्छा, ६. नगरस्स अन्तो, ७. भत्तस्स पुरे, ८. नगरस्स समीप, ९. मकसान अभावो, १०. नगरस्स बहि ।

[२] ११. अरञ्ञ गतो, १२. अग्गितो भय, १३. फलस्स रसो, १४. आगन्तुकस्स भत्त, १५. विञ्ञूहि गरहितो, १६. पितरा सदसो, १७. दधिना उपसित्त भोजन, १८. गुळेन मिस्सो ओदनो, १९. ब्राह्मणस्स देय्य, २०. फलान तित्तो, २१. दाने सोण्डो, २२ पब्बते ठितो ।

[३] २३. महाकस्सपो च सो थेरो च, २४. धम्मो इति सम्मतो, २५. न अरियो, २६. पधान वचन, २७. पञ्ञा एव रतन, २८. बुद्धघोसो च सो आचरियो च, २९. अन्धो च सो बधिरो च, ३०. न मित्तो, ३१. धम्मो इति बुद्धि, ३२. न ब्राह्मणो, ३३. कुच्छितो ब्राह्मणो, ३४. अप्पक लवण, ३५. सुट्ठु कत, ३६. किच्छेन कत, ३७. अतिक्कन्तो माल, ३८. अवकुट्ठ[1] कोकिलाय वन ।

[४] ३९. दिन्नो सुक्को यस्स सो, ४०. सम्पन्नानि सस्सानि यस्मि सो, ४१. अभिरुळ्हा वाणिजा यस्सा सा, ४२. विजितो मारो येन सो, ४३. ओतिण्णो दस्सो य सो, ४४. छिन्नो तरु येन सो, ४५. अपगत काळक यस्मा सो, ४६. पहूत धन यस्स सो, ४७. नत्थि समो यस्स सो, ४८. महानेके गजा यस्मि त, ४९. सह पुत्तेन आगतो यो, ५०. चित्ता गावो अस्सेति, ५१. उपगता दस वेस ते, ५२. सुवण्णविकारो अलङ्कारो अस्स, ५३. युवति जाया यस्स सो, ५४. बहू मालायो एतस्स, ५५. दीघा जङ्घा यस्स सो ।

---

१. अवकुट्ठन्ति = परित्यक्त (छोड़ा हुआ) ।

छत्तीसवाँ पाठ

गण

पहले बतलाया जा चुका है कि धातुओं के ९ गण होते हैं। (देखिये, तीसरा पाठ)। गणों के क्रम से धातुओं के रूप-क्रम भी दिए जा चुके हैं। (देखिये, तीसरा पाठ से तेरहवाँ पाठ तक)। वे गण क्रमशः इस प्रकार हैं :—

१. भ्वादि गण
२. रुधादि गण
३. दिवादि गण
४. तुदादि गण
५ तनादि गण
६. चुरादि गण
७. स्वादि गण
८. ज्यादि गण
९. क्र्यादि गण

इन नवों गणों में भ्वादि गण सबसे बड़ा है। इस गण में ३०४ धातु हैं। इस धातु-समूह में सबसे पहले 'भू' धातु है, इसलिए इसे भू + आदि = भ्वादि गण कहते हैं। इसी प्रकार क्रमशः रुध, दिव, तुद, तन, चुर, सु, नि और की धातुएँ शेष अन्य गणों के धातु-समूह में आदि में हैं। इन्हीं के नाम पर उन गणों के नाम रखे गए हैं। प्रत्येक धातु-समूह (=गण) के धातुओं के रूप प्रारम्भ के धातु के समान ही होते हैं। यहाँ क्रमशः नवों गणों के कुछ धातुओं के उदाहरण दिए जाते हैं—

४. तुदादि गण

धातु	पठमपुरिस एकवचन	अर्थ
तुद	तुदति	पीडा करता है
फुस	फुसति	छूता है
खिप	खिपति	फेंकता है
गिल	गिलति	निगलता है
लिख	लिखति	लिखता है
सुप	सुपति	सोता है

५ तनादि गण

धातु	पठमपुरिस एकवचन	अर्थ
तन	तनोति	फैलाता है
कर	करोति	करता है
सक	सक्कोति	सकता है
मन	मनोति	जानता है

६. चुरादि गण

धातु	पठमपुरिस एकवचन	अर्थ
चुर	चोरेति, चोरयति	चुराता
पुस	पोसेति, पोसयति	पोसता है
पूज	पूजेति, पूजयति	पूजता है
कथ	कथेति, कथयति	कहता है
छड्ड	छड्डेति, छड्डयति	फेंकता है
चिन्त	चिन्तेति, चिन्तयति	विचार करता है

७. स्वादि गण

धातु	पठमपुरिस एकवचन	अर्थ
सु	सुणोति	सुनता है
सक	सक्कणोति, सक्कुणोति	सकता है
वु	वुणोति	ढंकता है

८ ज्यादि गण

प्रथमपुरुष एकवचन	अर्थ
जिनाति	जीतता है
जानाति	जानता है
लुनाति	काटता है
धुनाति	धुनता है
मिनाति	मीना है
पुनाति	प्रशंसा करता है

क्रयादि गण

प्रथमपुरुष एकवचन	अर्थ
क्रिणाति	खरीदता है
वृणाति	ढकता है
सक्णाति	मलता है
स्नुणाति	मुनता है
सिणाति	[illegible] करता है

अभ्यास

[६] २६. वण्णेति, २७. वन्देति, २८. पूजेति, २९. झापेति, ३०. चोरेति।

[७] ३१. वुणोति, ३२. पापुणोति, ३३. सक्कोति, ३४, गिणोति, ३५. सुणोति।

[८] ३६. सिनाति, ३७ लुनाति, ३८. पुनाति, ३९. जानाति, ४०. चिनाति।

[९] ४१. सुणाति, ४२. वुणाति, ४३. किणाति, ४४. विक्किणाति, ४५. गिणाति।

पठमपुरिस एकवचन में रूप लिखिये:—

१. पच (भू०) = पकाना
२. गम (भू०) = जाना
३. कत (रु०) = काटना
४. मुच (रु०) = छोडना
५. झा (दि०) = ध्यान करना
६. बुध (दि०) = समझना
७. गिल (तु०)= निगलना
८. तुद (तु०) = पीडा करना
९. कर (त०) = करना
१०. सक (त०) = सकना
११. कथ (चु०)= कहना
१२. पूज (चु०)= पूजा करना
१३. सु (स्वा०)= सुनना
१४ प + आप (स्वा०)= प्राप्त करना
१५. लू (ज्या०) = काटना
१६. ञा (ज्या०)=जानना
१७. की (क्या०)=खरीदना
१८. सु (क्या०)=सुनना

सैंतीसवाँ पाठ

स्त्री-प्रत्यय

पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए शब्द के बाद सात प्रत्यय आते हैं—१. आ, २ ङी, ३. इनी, ४' नी, ५. आनी, ६. ऊ और ७. ति। यहाँ स्त्री प्रत्यय वाले शब्दों के कुछ उदाहरण दिए जाते हैं:—

प्रत्यय	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
आ	देवदत्तो	देवदत्ता
	अजो	अजा
	कोकिलो	कोकिला
	बालको	बालिका
ङी	नद	नदी
	मह	मही
	कुमारो	कुमारी
	तरुणो	तरुणी
	वारुणो	वारुणी
	गोतमो	गोतमी
	गच्छन्तो	गच्छन्ती, गच्छती
	गुणवन्तो	गुणवन्ती, गुणवती
इनी	यक्खो	यक्खिनी, यक्खी
	नागो	नागिनी, नागी
	सीहो	सीहिनी, सीही
	राजा	राजिनी
	मानुसो	मानुसिनी

३. वालिका मातरा सद्धि गेह गच्छति । ४. कुमारी पुप्फ याचति । ५. गोतमी कपिलवत्थुतो निक्खमित्वा बुद्धसासने पब्बज्ज लभि । ६. नागियो गामेसु विचरन्ति । ७. सीहियो दारके न गण्हन्ति । ८. दण्डिनी दण्डेन सुनख पहरति । ९ सा इत्थी मानुसिनी अहोसि मञ्ञे । १०. मम मातुलानी पुब्बे एव काल कता । ११. गहपतानी भिक्खून सदा दान देति । १२. वामोरू आपण गन्त्वा आभरण विक्किणाति । १३ युवति इतो कुहिं गता ? १४. तुम्ह घरणी गिलाना समाना अपि निच्च कम्म करोति । १५. पोक्खरणिय पदुमपुप्फानि पुप्फितानि सन्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. देवदत्ता झगडा कर रही है । २. बकरा पेडों की पत्तियाँ खाती है । ३. वालिका बुद्ध को नमस्कार करती है । ४. मही नदी में बहुत पानी है । ५. इस नदी में बाढ (=ओघो) आई हुई है । ६. वारुणी उन्मादिनी होती है । ७.यक्षिणी लडकों को प्यार करती है (=पियायति) । ८ भिक्षुणी जंगल में जाकर ध्यान करती है । ९. मेरी मामी बहुत धार्मिक है । १०. सुन्दर जाँघोंवाली स्त्री भिक्षुओं के लिए एक विहार बनवाती है । ११. युवती अपने पति के घर जाती है । १२ कुम्हारिनी मिट्टी से घड़े बनाती है । १३. दासी खेत मे काम करती है । १४. कुमारी भोजन पकाकर लोगों को खिलाती है । १५. गौतमी ने मुझे बुलाया है ।

---

(४) 'धि' शब्द के योग में—धि अलसं सिस्सं=आलसी शिष्य को धिक्कार है।

(५) 'अन्तरा' शब्द के योगमें—अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नालन्दं=राजगृह और नालन्दा के बीच।

(६) 'पति' शब्द के योग में—लोका पसन्ना बुद्धं पति=लोग बुद्ध के प्रति बडी श्रद्धा रखते हैं।

(७) 'विना' शब्द के योग में—न सिज्झति धम्मो विरियं विना=विना परिश्रम के धर्म सफल नहीं होता।

३. ततिया विभत्ति

कत्तुकरणेसु ततिया—भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के कर्त्ता में, करण कारक में, और क्रिया-विशेषण में ततिया विभत्ति होती है।

(१) भाववाचक में—पुरिसेन गम्मति=पुरुष द्वारा चलाया जाता है।

(२) कर्म-वाच्य के कर्त्ता में—बालकेन चन्दो दिस्सति=बालक द्वारा चन्द्रमा देखा जाता है।

(३) करणकारक में—दण्डेन सप्पं पहरति=डण्डे से साँप मारता है।

(४) क्रियाविशेषण में—गोत्तेन गोतमो = गोत्र से गोतम है। सुमेधो नाम नामेन=नाम से सुमेध। समेन धावति=समभूमि पर दौड़ता है। द्विदोणेन धञ्ञं किणाति= दो द्रोण से धान्य खरीदता है।

(५) साथ होने में—पुत्तेहि सह आगच्छति=पुत्रों के साथ आता है। सिस्सेहि सद्धिं गच्छति=शिष्यों के साथ जाता है। भिक्खूहि समं थेरो गच्छति=भिक्षुओं के साथ स्थविर जाते हैं।

(६) 'किं' योग में—किं ते जटाहि = तेरी जटाओं से क्या ?

(७) 'तुल्य' के अर्थ में—आचरियेन सदिसो सिस्सो=आचार्य के सदृश ही शिष्य है। जनकेन तुल्यो पुत्तो = पिता के तुल्य ही पुत्र है।

पुत्तो=राजा का पुत्र। **गामस्स मनुस्सा**=गाँव के आदमी। **दिवसस्स द्विक्खत्तुं**=दिन में दो बार।

इन अर्थों में भी छट्ठी विभक्ति होती है—

(१) कृदन्त शब्दों के साथ—**साधु सम्मतो बहुजनस्स**=बहुत लोगों का मान्य। **तिट्ठन्ति धम्मस्स ञातारो**=धर्म के जानने वाले हैं।

(२) जाति, गुण तथा क्रिया में से जब किसी एक का निर्धारण किया जाय, तो वहाँ छट्ठी विभक्ति होती है और सत्तमी भी :—

जाति—**नरानं खत्तियो सेट्ठो**, अथवा **नरेसु खत्तियो सेट्ठो**=मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है।

गुण—**कण्हा गावीनं सम्पन्नखीरतमा**, अथवा **कण्हा गावीसु सम्पन्नखीरतमा**=काली गौवों में अधिक दूध देने वाली होती है।

क्रिया—**पथिकानं धावं सीघतमो**, अथवा **पथिकेसु धावं सीघतमो**=पथिकों में दौड़ने वाला शीघ्र होता है।

ततिया के अर्थ में—**पुप्फस्स बुद्धं पूजेति**=फूल से बुद्ध की पूजा करता है।

हेतु के अर्थ में **उदरस्स हेतु, उदरस्स कारणा**=पेट के हेतु।

७. सत्तमी विभक्ति

सत्तम्याधारे—क्रिया के आधार में सत्तमी विभक्ति होती है। जैसे—**पब्बते तिट्ठति**=पहाड़ पर रहता है। **कुम्भे ओदनं पचति**=हाँडी में भात पकाता है। **तिलेसु तेलं वत्तति**=तिल में तेल है।

इन अर्थों में भी सत्तमी विभक्ति होती है —

(१) निमित्त—**दन्तेसु कुञ्जरं हञ्ञति**=दाँतों के निमित्त से हाथी को मारता है। **मुसावादे पाचित्तियं**=झूठ बोलने में 'पाचित्तिय' होता है।

(=पत्त) दीजिए। ५. कोस भर गाँव नहीं है। ६. वाराणसी और कौशाम्वी के वीच में सहजाति है। ७ फरसा से मैं फल काटता हूँ। ८. गोत्र से वह आदमी काश्यप (=कस्सपो) है। ९. नाम से वह भिक्षु सुमन है। १०. भिखारियों के लिए दान देना चाहिए। ११. वहुजन हित वहुजन सुख के लिए तथागत धर्म को प्रकाशित करते है। १२. साँप से सभी डरते हैं। १३. ब्राह्मण का पुत्र स्कूल में पढता है। १४. पेडों पर पक्षियाँ निवास करते हैं।

---

२. कर्मवाच्य

जिस वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार हो और कर्म ही की प्रधानता पाई जाती हो, तो वह वाक्य कर्मवाच्य होता है। कर्मवाच्य में, कर्त्ता में तविया विभत्ति और कर्म में पठमा विभत्ति होती है। क्रिया के पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के समान होते हैं। इसमें भी धातु के बाद 'य' आता है। जैसे—

रञ्ञा धनं दीयते=राजा द्वारा धन दिया जाता है। **पितरा त्वं दीयसि**=पिता द्वारा तुम दी जा रही हो। **दासेन ओदनो पचीयति**=दास द्वारा भात पकाया जाता है। **चोरेन सो पहरीयते**=चोरों द्वारा वह मारा जाता है।

कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्रियाओं के कुछ उदाहरणः—

करीयति=किया जाता है।
देसीयति=उपदेश दिया जाता है।
आहरीयति=लाया जाता है।
हरीयति=ले जाया जाता है।
आकड्ढीयति=खींचा जाता है।
गण्हीयति=लिया जाता है।
बन्धीयति=बाँधा जाता है।
कसीयति=हल से जोताया जाता है।

कर्मवाच्य मे प्रयुक्त कृदन्तः—

दट्ठ=डँसा हुआ।
पूजित=पूजा किया हुआ।
वन्दित=नमस्कार किया हुआ।
देसित=उपदेश दिया हुआ।

कृदन्तों के रूप तीनों लिंगों में होते हैं।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

चालीसवाँ पाठ

विशेषण

विशेषण चार प्रकार के होते हैं—(१) गुणवाचक, (२) संख्यावाचक, (३) कृदन्त, और (४) तद्धितान्त। इनमें से प्रायः सबका वर्णन किया जा चुका है। यहाँ संक्षेप में कुछ उदाहरणों के साथ इनका परिचय दिया जा रहा है :—

१. गुणवाचक

अच्छाई, बुराई आदि गुणों को प्रगट करने वाले विशेषण को गुणवाचक कहते हैं। जैसे—

सुन्दरता—सोभन, साधु, रुचिर, मनुञ्ञ, सुन्दर, मनोरम, भद्द, पेसल, कल्याण, मनाप, सुभ आदि।

उत्तम—उत्तम, पवर, जेट्ठ, पमुख, वर, पधान, पामोक्ख, सेय्य, पणीत आदि।

प्रिय—इट्ठ, सुभग, वल्लभ आदि।

शून्य—तुच्छ, रित्तक, सुञ्ञ, असार आदि।

पवित्र—पूत, पवित्त, सुचि आदि।

हीन—निहीन, हीन, लामक, अधम आदि।

ऐसे ही वृहत्, स्थूल, सम्पूर्ण, प्रचुर, अल्प, सरल, तीक्ष्ण, उग्र, गतिशील, कर्कश, उपयुक्त, निष्फल, असहाय, सुदक्ष, विख्यात, लोभी, क्रोधी, कृपण, पूजित, विस्तृत आदि गुणों को प्रगट करने वाले विशेषण गुणवाचक होते हैं।

उट्ठासि। ८. बुद्धस्स धम्मो उत्तमतरो निय्यानिको च। ९. तेन पस्सितब्बं फलं मया गण्हित। १०. सेम्हिको आबाधो जातो।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१. सुन्दर घोड़ा आ रहा है। २. श्रेष्ठ आदमी जा रहा है। ३. उत्तम आहार खाकर मैं सोना चाहता हूँ। ४. चैत्य की वन्दना करने के लिए चार आदमी जाते हैं। ५. यह तथागत का अन्तिम वचन है। ६. कुशीनगर में भगवान् बुद्ध का शारीरिक स्तूप है। ७. आरण्यक भिक्षु ध्यान करता है। ८. भगवान् का आवसथ दाक्षिणेय्य है। ९. यह तथागत का उत्तम शासन है। १०. भिक्षुओ! अप्रमाद से जीवन के लक्ष्य का सम्पादन करो।

॥ भवतु सब्ब मङ्गलं ॥